विधार्थियों के लिए नि:शुल्क वितरण हेतु

किशोर भारती

कक्षा आठवीं

जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

Published by:

Secretary, The Jammu & Kashmir State Board of School Education, Jammu/Srinagar
Website: www.jkbose.co.in

(C) Copyright Reserved: The Jammu & Kashmir State Board of School Education

No part of this publication may be stored in a retrieval system, transmitted, or reproduced in any way, including but not limited to photocopy, photograph magnetic or other record without the prior agreement and written permission of the copyright owner.

Disclaimer

Every effort has been made to supply complete and accurate information.
In case, there is any omission, printing mistake or any other error which might have crept in inadvertently, neither the compiler, publisher nor any of other distributors shall take any legal responsibility.

March, 2016

Reprint: February 2020

विधार्थियों के लिए नि:शुल्क वितरण हेतु

Printed by:

Sarswati Art Printers, E-25, Sector-4, Bawana Industrial Area, New Delhi-110039

आमुख

प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक 'किशोर भारती' कक्षा आठवीं संग्रहीत साहित्यिक सामग्री को राष्ट्रीय पाठ्यपद्धति 2005 के अनुसार विकसित किया गया है प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक की रुपरेखा बच्चों को स्कूली जीवन के अतिरिक्त सामाजिक जीवन से भी जोड़ने पर बल देती है ताकि बच्चे के व्यक्तित्व का सामूहिक विकास हो सके।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसी सामग्री एवम् शैक्षिक क्रियाओं का समावेश है जिनके द्वारा छात्रों में राष्ट्रीयता, देशभक्ति, जनतांत्रिकता, मानवता, धर्मनिर्पेक्षता, समाजवाद तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो तथा तर्कयुक्त वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

प्रस्तुत शिक्षा नीति सुझाती है कि पाठ्य–सामग्री में हृदय तथा बुद्धि का समन्बय हो, बच्चों के चरित्र निर्माण में सहायक हो अर्थात् कुल मिलाकर बच्चों में स्वस्थ मनोवृत्ति की दृष्टि से प्रेरणादायक हो। पाठ्य सामग्री का चयन नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए पाठ्य सामग्री के चयन में केंद्रित शिक्षाक्रम से सम्बन्धित विषय सामग्री एवं जीवन मूल्यों पर विशेष बल हो, इस प्रकार का प्रयास प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य है।

वास्तव में जम्मू–कश्मीर बोर्ड ऑफ स्कूल एजूकेशन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न परीक्षाओं को आयोजित करने के साथ–साथ उच्च एवम् माध्यमिक शिक्षा के स्तर में सुधार लाना भी उसका दायित्व है उपरिलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर सब कुछ किया गया है। राष्ट्रीय प्रशिक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा परिवेश के अनुसार ढालने का प्रयत्न किया गया है। हमने अपने राज्य के बच्चों के स्तर को ध्यान में रखकर पुस्तक की पाठ्य–सामग्री का विकास किया है।

प्रस्तुत पुस्तक ''किशोर भारती'' (आठवीं कक्षा) के बनाने में हिन्दी समिति के सदस्यों के सहयोग के लिये मैं विशेष आभारी हूँ। प्रस्तुत पुस्तक में जिन लेखकों की रचनाएँ सम्मिलित की गई उनके अतुलनीय, अकथनीय तथा अवर्णनीय योगदान के प्रति हम विशेष रुप से अनुग्रहीत हैं जो इस पुस्तक के आधार भूत स्तम्भ हैं।

प्रस्तुत पुस्तक छात्रों में भाषाई तथा साहित्यिक रुचि विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी। सम्भव है कि पुस्तक छात्रों के हृदय में पड़े हुए साहित्यिक बीजों को अंकुरित एवम् प्रस्फुटित करने की क्रिया को सक्रिय करने में सहायक हो जिससे बच्चों में स्वाध्याय की रुचि विकसित हो। पुस्तक में त्रुट्टियों एवम् दोषों के सुधार हेतु विद्वज्जनों तथा भाषा विदों के सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

मैं सैक्रेटरी बोर्ड श्रीमती वीणा पंडिता, डायरैक्टर अकेडमिक्स कनीज़ फ़ातिमा और सी.डी.आर. विंग. के डॉ. यासिर हमीद सिरवाल के इस प्रशंसनीय योगदान की सराहना करता हूँ जिन्होने आठवीं की पुस्तक को नव–निर्मित करवाया।

प्रो0 ज़हूर अहमद चाट
चैयरमैन
जम्मू–कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजूकेशन

आभार

प्रस्तुत पुस्तक ''किशोर भारती'' (कक्षा आठवीं) को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पद्धति–2005 के अनुसार विकसित एवं निर्मित करने के लिये सी.डी.आर. विंग द्वारा आयोजित प्रयोगशाला को सफल एवम् सार्थक बनाने के लिये प्रयोगशाला में आमंत्रित विद्वानों एवम् विशेषज्ञों का अनुपम योगदान रहा जिन्होने प्रयोगशाला में अपने अनुभवों तथा अनथक बौद्धिक प्रयासों द्वारा छात्रों की कक्षा के स्तरानुसार यथोचित पाठ्य सामग्री को नव निर्मित पुस्तक में सम्मिलित करते हुए प्रस्तुत पाठ्य–पुस्तक निर्माण के पवित्र कार्य को समपन्न किया। पुस्तक निर्माण हेतु आयोजित कार्यशाला को अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचाने के लिये निम्नलिखित विद्वानों तथा सी.डी.आर. विंग. के सदस्यों का योगदान रहा वे इस प्रकार है :–

1. डॉ. संजीवनी वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल रिहाड़ी।
2. श्रीमति रजनी अबरोल वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल गांधी नगर।
3. श्री केवल कृष्ण शर्मा वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल ढ़क्कर अखनूर।
4. कुमारी रीटा चाड़क वरिष्ठ प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल मुबारक मंडी।
5. श्रीमती कांता शर्मा प्रवक्ता गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल बक्शी नगर।
6. श्रीमती लवली मास्टर गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल रणबीर।
7. श्री मिल्खी राम मास्टर गवर्नमैंट हायर सैकंडरी स्कूल अखनूर।

विषय के मर्मज्ञ उपर्युक्त विद्वानों के अतिरिक्त सी.डी.आर. विंग. के जिन अधिकारियों का पाठ्यक्रम पद्धति को विकसित एवं निर्मित करने का प्रमुख योगदान रहा व है :–

डॉ0 यासिर हामिद सिरवाल – शैक्षिक पदाधिकारी

प्रस्तुत पुस्तक की निर्माण एवम् विकास प्रक्रिया के अतिरिक्त
पब्लिकैशन विंग0 के प्रति भी अनथक परिश्रम द्वारा पुस्तक निर्माताओं, विशेषज्ञों तथा सी0 डी0 आर0 विंग के अधिकारियों के इस प्रयास को सफल एवं सार्थक बनाया।

आठवीं कक्षा की पुस्तक के निर्माण हेतु जो पाठ्य–सामग्री का प्रयोग किया हैं उसके लिये जम्मू कश्मीर स्टेट बोर्ड ऑफ स्कूल ऐजुकेशन राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का आभार प्रकट करता हैं।

कनीज़ फ़ातिमा
डायरेक्टर अकैडमिक्स

विशय सूची

KE9GZL

आमुख

आभार

1	ध्वनि – कविता	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	6–8
2	लाख की चूड़ियाँ – कहानी	कामतानाथ	9–14
3	अपराजिता – विकंलाग जीवन	शिवानी	15–19
4	दीवानों की हस्ती – कविता	भगवती चरण वर्मा	20–21
5	चिट्ठियों की अनूठी दुनिया – निबंध	अरविंद कुमार सिँह	22–29
6	भगवान के डाकिए – कविता	सामधारी सिँह दिनकर	30–32
7	प्लास्टिक जनित प्रदूषण – लेख	विभागीय	33–40
8	क्या निराश हुआ जाए – निबन्ध	हजारी प्रसाद द्विवेदी	41–49
9	कामचोर –कहानी	इस्मत चुगताई	50–58
10	जीवन नहीं मरा करता – कविता	गोपाल दास 'नीरज'	59–61
11	जब सिनेमा ने बोलना सीखा	प्रदीप तिवारी	62–67
12	जहाँ पहिया है – रिपोर्ताज	पी॰ साईनाथ अनु	68–75
13	अकबरी लोटा – कहानी	अन्नपूर्णानंद शर्मा	76–85
14	ओ नभ के मंडराते बादल – कविता	रामेश्वर शुक्ल अचंल	86–88
15	प्रेमचन्द – जीवनी	नागार्जून	89–98
16	बाज और साँप – कहानी	निर्मल वर्मा	99–103
17	टोपी – कहानी	संजय	104–114
18	सूरदास के पद – कविता	सूरदास	115–116
19	जम्मू–कश्मीर में हिन्दी – निबन्ध	विभागीय	117–121
20	सुदामा चरित – कविता	नरोत्तमदास	122–125
21	शब्दकोश		126–134

उपर्युक्त पाठों का चयन छात्रों का सर्वस्व विकास करने में अहम भूमिका अदा करें गे। साहित्य की कहानी, उपन्यास, निबंध, रिपोर्ताज, संस्मरण, लेख, नाटक आदि विधाओं का संकलन किया गया है। इन सभी विधाओं से छात्रों को परिचित करवाना, बौद्धिक विकास, रोचकता, सामाजिक,

राजनैतिक, धार्मिक सांस्कृतिक मूल्यों का यर्थाथबोध कराना भी इन पाठों का मूल उद्देश्य है। कविता के प्रति रूचि, कविता का अध्ययन व सृजन भी बच्चों में उपर्युक्त कवितओं के माध्यम से होता है। छायावादी कवि निराला, प्रगतिवादी कवि दिनकर और प्रयोगवादी कवि अंचल की कविताओं में युगीन बोध की समस्याओं और आधुनिकीकरण का उल्लेख भी हुआ मिलता है। अन्ततः वर्तमान मूल्यों, सहनशीलता, उदार वादिता, न्यायप्रियता, धार्मिक भावनाओं, समाज के प्रति संवेदना अन्य इत्यादि संस्कारों की प्रेरणा पाठ्य–पुस्तक में विविध पाठों के माध्यम से पूरक हो जाता है।

इस कार्य प्रणाली में सभी शिक्षक विदों का सुझाव व चयन प्रक्रिया में सराहनीय योगदान रहा है।

शिक्षक से

चयन करते हुए विषयों के साथ विधाओं का स्तबक बनाने का प्रयास किया गया है। इस गुलदस्ते में यदि एक विषय निबंध की विधा करने वाली कविता के चयन का प्रयास भी किया गया है। विविध भाषा–परिवेशों से विद्यार्थी को परिचित कराना भाषा–शिक्षण की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। पुस्तक में इसकी पूर्ति का प्रयास किया गया है। पाठ – केंद्रित प्रश्नों के साथ आसपास के ज्ञान–क्षेत्रों और शब्दों को भी शामिल किया गया है।

पाठ्यपुस्तक के बीस पाठों में विधि विषय तथा विधाएँ समाहित हैं। प्रथम पाठ निराला की कविता 'ध्वनि' का संपादित अंश है, इस कविता में प्रकृति के प्रति मानवीय संवेदना को व्यक्त किया है। कहानियों में कामतानाथ की कहानी लाख की चूड़ियाँ'' शहरीकरण और औद्योगिक विकास से ग्रामोद्योगिक के उजड़ने की पीड़ा को चित्रित करती है। यह कहानी नाते–नेह में रचे बसे गाँवों के सहज संबंधों में बिखराव और सांस्कृतिक ह्रास के आर्थिक कारणों को स्पष्ट करती है। अपराजिता'' विकलांग–जीवन से सम्बंधित एक लड़की की कहानी है जो बच्चों में प्रेरणा–स्त्रोत का सुदृढ़ स्तंभ का काम करेगी उनमें से नाकारात्मक सोच को समाप्त करेगी, के प्रति एक साकारात्मक दृष्टिकोण के प्रति प्रेरित कर उनमें उत्साह का संचार करेगी। दीवानों की हस्ती में उत्साह और अलमस्ती दी गई है 'चिट्ठियों की अनूठी' दुनिया में संवाद माध्यमों की विकास यात्रा का रोचक विवरण है। दिनकर की कविता 'भगवान के डाकिए' में कवि ने बादल और पक्षियों को डाकिए कहा है इसमें प्रतीकात्मकता प्लास्टिक जनित प्रदूषण का संदेश लेख में दिया है। प्लास्टिक के कारण हमारे वातावरण में बढ़ते

प्रदूषण से अवगत करवाया है। इसका प्रयोग अनेक बिमारियों का कारण है। इसकें दुष्प्रभाव से बचने के लिए प्रेरित किया है। 'क्या निराश हुआ जाए' – विभिन्न दुर्व्यवस्थाओं और चारित्रिक मूल्यों की गिरावट के बीच साकारात्मक तथ्यों को रेखांकित करता है। 'कामचोर' एक पारिवारिक समस्या को आधार बनाकर लिखी गई है जिसमें ऊधम मचानेवाले बच्चों से होने वाली परेशानी की रोचक प्रस्तुति है। यह कहानी एक सुव्यवस्थित परिवार की माँग पैदा करती है। ''जीवन नहीं मरा करता है' कविता में बच्चों को कभी न हारने की प्रेरणा दी गई है और हर परिस्थिति में उत्साहित रहने के लए प्रेरित किया है।

जब सिनेमा ने बोलना सीखा में भारतीय सिनेमा के इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव को उजागर किया गया है। यह निबंध मूक सिनेमा के सवाक् सिनेमा में विकसित होने की कहानी बयान करता है जो शिक्षा की नजर से भी अर्थवान है। प्रसिद्ध पत्रकार पी. साईनाथ की अंग्रेजी से अनूदित पर जहाँ पहिया है में स्त्री – सशक्तिकरण का एक सजीव उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। अन्नपूर्णानंद की कहानी अकबरी लोटा हास्य–व्यंग्य से भरी हुई अत्यंत रोचक कहानी है। ''ओ नभ के मंडराते बादल'' नामक कविता बच्चों में स्वाभाविक उल्लास का संचार करने में सक्षम है। यथा वर्षा में बच्चे खूब मस्ती करते हैं। इसिलए यह कविता उनके स्वभाव के अनुरूप होते हुए आकर्षण का केन्द्र रहेगी और वे बादलों के निर्माण और बरसने के ज्ञान से भी अवगत होंगें। प्रेमचन्द नागार्जुन द्वारा रचित जीवनी प्रेमचन्द के जीवन को उभारा गया है कि किस तरह मनुष्य अगर चाहे तो अपने जीवन में चारो तरफ से अभाव में ग्रस्त होने पर भी अपना धैर्य नहीं छोड़ता और अपने आत्मबल से सब कुछ पा लेता है। निर्मल वर्मा की कहानी बाज और साँप एक बोध कथा है।

सृंजय की कहानी टोपी लोक कथा का पुनर्सृजन है। इस कहानी में गहरा सामाजिक सरोकार है। यह सत्ता से जनता के संबंधों की समीक्षा करती है। सूरदास के पद में सूर के पदों में वात्सल्य, सुदामा चरित में मित्रता, आदि है। जम्मू–कश्मीर में हिंदी इस पाठ के अन्तर्गत हिंदी के क्रामिक विकास के इतिहास को उभारा गया है।

1

ध्वनि

KEID29

अभी न होगा मेरा अंत
अभी–अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत–
अभी न होगा मेरा अंत।

हरे–हरे ये पात,
डालिया!, कलिया!, कोमल गात।
मैं ही अपना स्वप्न–मृदुल–कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

पुष्प–पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूंगा फिर उनको।
हैं मेरे वे जहाँ अनंत–
अभी न होगा मेरा अंत।

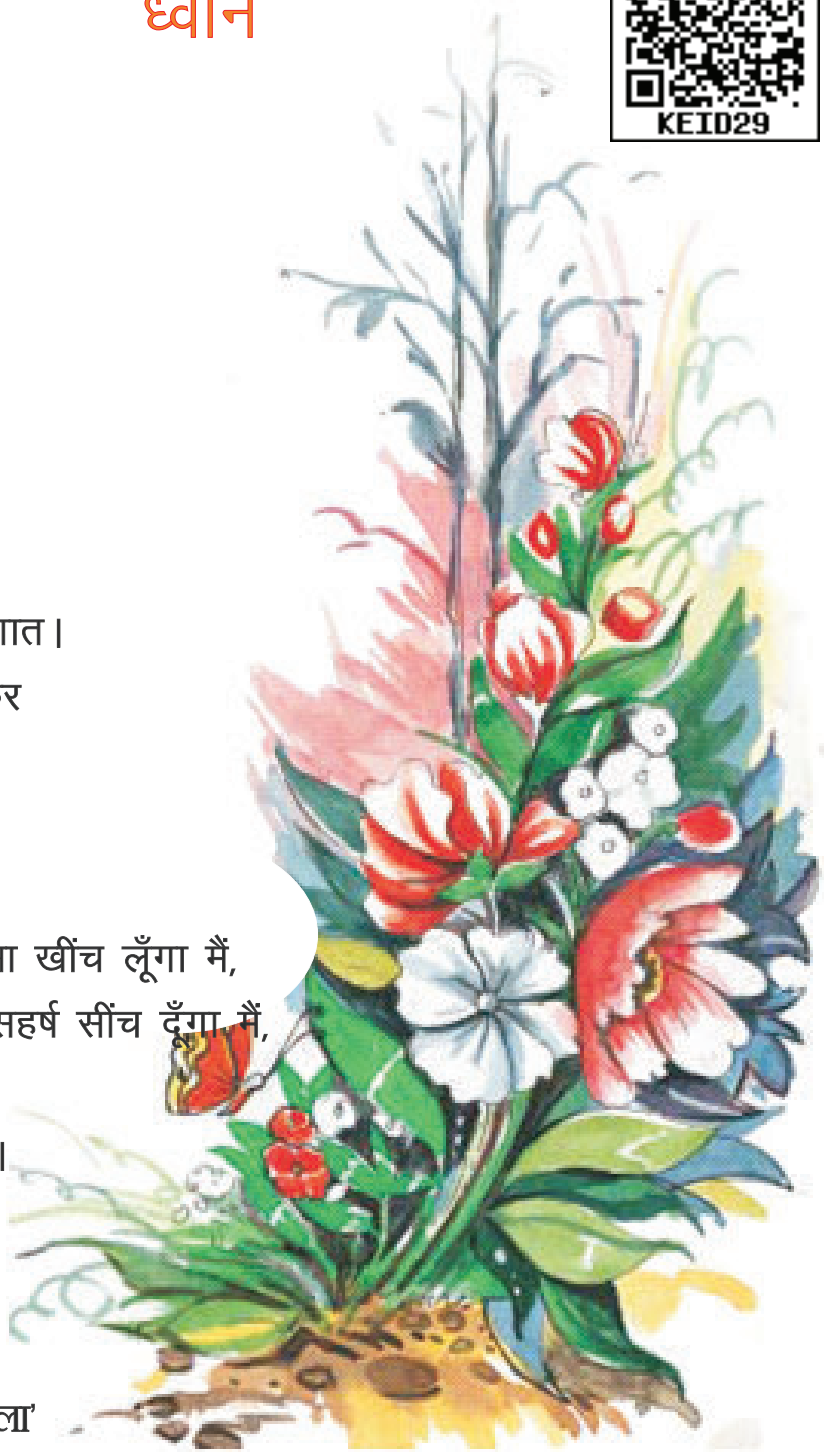

–सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि को ऐसा विश्वास क्यों है कि उसका अंत अभी नहीं होगा?
2. फूलों को अनंत तक विकसित करने के लिए कवि कौन–कौन–सा प्रयास करता है?
3. कवि पुष्पों की तंद्रा और आलस्य दूर हटाने के लिए क्या करना चाहता है?

कविता से आगे

1. वसंत को ऋतुराज क्यों कहा जाता है? आपस में चर्चा कीजिए।
2. वसंत ऋतु में आनेवाले त्योहारों के विषय में जानकारी एकत्र कीजिए और किसी एक त्योहार पर निबंध लिखिए।
3. ऋतु परिवर्तन का जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है" –इस कथन की पुष्टि आप किन–किन बातों से कर सकते हैं?लिखिए।

अनुमान और कल्पना

1. कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ पढ़कर बताइए कि इनमें किस ऋतु का वर्णन है?
   फूटे हैं आमों में बौर
   भौंर वन–वन टूटे हैं।
   होली मची ठौर–ठौर
   सभी बंधन छूटे हैं।
2. स्वप्न भरे कोमल–कोमल हाथों को अलसाई कलियों पर फेरते हुए कवि कलियों को प्रभात के आने का संदेश देता है, उन्हें जगाना चाहता है और खुशी–खुशी अपने जीवन के अमृत से उन्हें सींचकर हरा–भरा करना चाहता है। फूलों–पौधों के लिए आप क्या–क्या करना चाहेंगे?
3. कवि अपनी कविता में एक कल्पनाशील कार्य की बात बता रहा है। अनुमान कीजिए और लिखिए कि उसके बताए कार्यो का अन्य किन–किन संदर्भो से संबंध जुड़ सकता है ? जैसे –नन्हे–मुन्ने बालक को माँ जगा रही हो...।

भाषा की बात

1. 'हरे–हरे', 'पुष्प–पुष्प' में एक शब्द की एक ही अर्थ में पुनरावृति हुई है। कविता के 'हरे–हरे ये पात' वाक्यांश में 'हरे–हरे' शब्द युग्म पत्तों के लिए विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यहाँ 'पात' शब्द बहुवचन में प्रयुक्त है। ऐसा प्रयोग भी होता है जब कर्ता या विशेष्य एक वचन में हो और कर्म या क्रिया या विशेषण बहुवचन में जैसे–वह लंबी–चौड़ी बातें करने लगा। कविता में एक ही शब्द का एक से अधिक अर्थो में भी प्रयोग होता "तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती है।" जो तीन बार खाती थी वह

तीन बेर खाने लगी है। एक शब्द 'बेर' का दो अर्थों में प्रयोग करने से वाक्य में चमत्कार आ गया। इसे यमक अलंकार कहा जाता है। कभी–कभी उच्चारण की समानता से शब्दों की पुनरावृति का आभास होता है जबकि दोनों दो प्रकार के शब्द होते हैं जैसे–मन का/मनका।
ऐसे वाक्यों को एकत्रा कीजिए जिनमें एक ही शब्द की पुनरावृनि हो। ऐसे प्रयोगों को मयान से देखिए और निम्नलिखित पुनरावृत शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–बातों–बातों में, रह–रहकर, लाल–लाल, सुबह–सुबह, रातों–रात, घड़ी–घड़ी।

2. 'कोमल गात, मृदुल वसंत, हरे–हरे ये पात'

विशेषण जिस संज्ञा (या सर्वनाम) की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। उपर दिए गए वाक्यांशों में गात, वसंत और पात शब्द विशेष्य हैं, क्योंकि इनकी विशेषता (विशेषण) क्रमशः कोमल, मृदुल और हरे–हरे शब्दों से ज्ञात हो रही है।
हिंदी विशेषणों के सामान्यतया चार प्रकार माने गए हैं–गुणवाचक विशेषण, परिमाणवाचक विशेषण, संख्यावाचक विशेषण और सार्वनामिक विशेषण।

कुछ करने को

1. वसंत पर अनेक सुंदर कविताए! हैं। कुछ कविताओं का संकलन तैयार कीजिए।
2. शब्दकोश में 'वसंत' शब्द का अर्थ देखिए। शब्दकोश में शब्दों के अर्थो के अतिरिक्त बहुत–सी अलग तरह की जानकारिया! भी मिल सकती हैं। उन्हें अपनी कॉपी में लिखिए।

शब्दार्थ

मृदुल	–	कोमल
पात	–	पत्ता
गात	–	शरीर
निद्रित	–	सोया हुआ
प्रत्यूष	–	प्रातःकाल
तंद्रालस	–	नींद से अलसाया हुआ
लालसा	–	कुछ पाने की चाह, अभिलाषा, ईच्छा
स्वप्न	–	सपना
मनोहर	–	मन को हरने वाला, सुंदर
सहर्ष	–	प्रसन्नता के साथ

2

लाख की चूड़ियाँ

सारे गाँव में बदलू मुझे सबसे अच्छा आदमी लगता था क्योंकि वह मुझे सुंदर–सुंदर लाख की गोलियाँ बनाकर देता था। मुझे अपने मामा के गाँव जाने का सबसे बड़ा चाव यही था कि जब मैं वहाँ से लौटता था तो मेरे पास ढेर सारी गोलियाँ होतीं, रंग–बिरंगी गोलिया! जो किसी भी बच्चे का मन मोह लें।

वैसे तो मेरे मामा के गाँव का होने के कारण मुझे बदलू को 'बदलू मामा' कहना चाहिए था परंतु मैं उसे 'बदलू मामा' न कहकर बदलू काका कहा करता था जैसा कि गाँव के सभी बच्चे उसे कहा करते थे। बदलू का मकान कुछ उँचे पर बना था। मकान के सामने बड़ा–सा सहन था जिसमें एक पुराना नीम का वृक्ष लगा था। उसी के नीचे बैठकर बदलू अपना काम किया करता था। बगल में भटटी दहकती रहती जिसमें वह लाख पिघलाया करता। सामने एक लकड़ी की चौखट पड़ी रहती जिस पर लाख के मुलायम होने पर वह उसे सलाख के समान पतला करके चूड़ी का आकार देता। पास में चार–छह विभिन्न आकार की बेलननुमा मुँगेरिया! रखी रहतीं जो आगे से कुछ पतली और पीछे से मोटी होतीं। लाख की चूड़ी का आकार देकर वह उन्हें मुँगेरियों पर चढ़ाकर गोल और चिकना बनाता और तब एक–एक कर पूरे हाथ की चूड़ियाँ बना चुकने के पश्चात वह उन पर रंग करता।

पुरानी थी। बगल में ही उसका हुक्का रखा रहता जिसे वह बीच–बीच में पीता रहता। गाँव में मेरा दोपहर का समय अधिकतर बदलू के पास बीतता। वह मुझे 'लला' कहा करता और मेरे पहुँचते ही मेरे लिए तुरंत एक मचिया मँगा देता। मैं घंटों बैठे–बैठे उसे इस प्रकार चूड़िया! बनाते देखता रहता। लगभग रोज ही वह चार–छह जोड़े चूड़िया! बनाता। पूरा जोड़ा बना लेने पर वह उसे बेलन पर चढ़ाकर कुछ क्षण चुपचाप देखता रहता मानो वह बेलन न होकर किसी नव–वधु की कलाई हो।

बदलू मनिहार था। चूड़ियाँ बनाना उसका पैतृक पेशा था और वास्तव में वह बहुत ही सुंदर चूड़ियाँ बनाता था। उसकी बनाई हुई चूड़ियों की खपत भी बहुत

थी। उस गाँव में तो सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ पहनती ही थीं आस–पास के गाँवों के लोग भी उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। परंतु वह कभी भी चूड़ियों को पैसों से बेचता न था। उसका अभी तक वस्तु–विनिमय का तरीका था और लोग अनाज के बदले उससे चूड़ियाँ ले जाते थे। बदलू स्वभाव से बहुत सीधा

था। मैंने कभी भी उसे किसी से झगड़ते नहीं देखा। हा!, शादी–विवाह के अवसरों पर वह अवश्य ज़िद पकड़ जाता था। जीवन भर चाहे कोई उससे मुफत चूड़िया! ले जाए परंतु विवाह के अवसर पर वह सारी कसर निकाल लेता था। आखिर सुहाग के जोड़े का महन्व ही और होता है। मुझे याद है, मेरे मामा के यहाँ किसी लड़की के विवाह पर जरा–सी किसी बात पर बिगड़ गया था और फिर उसको मनाने में लोहे लग गए थे। विवाह में इसी जोड़े का मूल्य इतना बढ़ जाता था कि उसके लिए उसकी घरवाली को सारे वस्त्रा मिलते, ढेरों अनाज मिलता, उसको अपने लिए पगड़ी मिलती और रुपये जो मिलते सो अलग।

यदि संसार में बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो वह थी काँच की चूड़ियों से। यदि किसी भी स्त्री के हाथों में उसे काँच की चूड़ियाँ दिख जातीं तो वह अंदर–ही–अंदर वुफढ़ उठता और कभी–कभी तो दो–चार बातें भी सुना देता।

मुझसे तो वह घंटों बातें किया करता। कभी मेरी पढ़ाई के बारे में पूछता, कभी मेरे घर के बारे में और कभी यों ही शहर के जीवन के बारे में। मैं उससे कहता कि शहर में सब काँच की चूड़ियाँ पहनते हैं तो वह उतर देता, शहर की बात और है, लला! वहाँ तो सभी कुछ होता है। वहाँ तो औरतें अपने मरद का हाथ पकड़कर सड़कों पर घूमती भी हैं और फिर उनकी कलाइयाँ नाजुंक होती हैं न लाख की चूड़िया! पहनें तो मोच न आ जाए।

कभी–कभी बदलू मेरी अच्छी खासी खातिर भी करता। जिन दिनों उसकी गाय के दूमा होता वह सदा मेरे लिए मलाई बचाकर रखता और आम की फसल में तो मैं रोजं ही उसके यहाँ से दो–चार आम खा आता। परंतु इन सब बातों के अतिरिक्त जिस कारण वह मुझे अच्छा लगता वह यह था कि लगभग रोज ही वह मेरे लिए एक–दो गोलियाँ बना देता।

मैं बहुधा हर गर्मी की छुटी में अपने मामा के यहाँ चला जाता और एक–आधा महीने वहाँ रहकर स्कूल खुलने के समय तक वापस आ जाता। परंतु दो–तीन बार ही मैं अपने मामा के यहाँ गया होउँगा तभी मेरे पिता की एक दूर के शहर में बदली हो गई और एक लंबी अवधि तक मैं अपने मामा के गाँव न जा सका। तब लगभग आठ–दस वर्षो के बाद जब मैं वहाँ गया तो इतना बड़ा हो चुका था कि लाख की गोलियों में मेरी रुचि नहीं रह गई थी। अतः गाँव में होते हुए भी कई दिनों तक मुझे बदलू का मयान न आया। इस बीच मैंने देखा कि गाँव में लगभग सभी स्त्रीयाँ काँच की चूड़ियाँ पहने हैं। विरले ही हाथों में मैंने लाख की चूड़ियाँ देखीं। तब एक दिन सहसा मुझे बदलू का मयान हो आया। बात यह हुई कि बरसात में मेरे मामा की छोटी लड़की आँगन में फिसलकर गिर पड़ी और उसके हाथ की काँच की चूड़ी टूटकर उसकी कलाई में घुस गई और उससे खून बहने लगा। मेरे मामा उस समय घर पर न थे। मुझे ही उसकी मरहम–पटी करनी पड़ी। तभी सहसा मुझे बदलू का ध्यान हो आया और मैंने सोचा कि उससे मिल आउँ। अतः शाम को मैं घूमते–घूमते उसके घर चला गया। बदलू वहीं चबूतरे पर नीम के नीचे एक खाट पर लेटा था।

नमस्ते बदलू काका मैंने कहा।

नमस्ते भइयाँ उसने मेरी नमस्ते का उतर दिया और उठकर खाट पर बैठ गया। परंतु उसने मुझे पहचाना नहीं और देर तक मेरी ओर निहारता रहा।

मैं हूँ जनार्दन, काका आपके पास से गोलियाँ बनवाकर ले जाता था। मैंने अपना परिचय दिया।

बदलू फिर भी चुप रहा। मानो वह अपने स्मृति पटल पर अतीत के चित्र उतार रहा हो और तब वह एकदम बोल पड़ा, आओ–आओ, लला बैठो! बहुत दिन बाद गाँव आए।

हाँ, इमार आना नहीं हो सका, काका! मैंने चारपाई पर बैठते हुए उतर दिया।

कुछ देर फिर शांति रही। मैंने इधर–इधर दृष्टि दौड़ाई। न तो मुझे उसकी मचिया ही नज़र आई, न ही भट्ठी।

आजकल काम नहीं करते काका?मैंने पूछा।

नहीं लला, काम तो कई साल से बंद है। मेरी बनाई हुई चूड़ियाँ कोई पूछे तब तो। गाँव–गाँव में काँच का प्रचार हो गया है। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, मशीन युग है न यह, लला! आजकल सब काम मशीन से होता है। खेत भी मशीन से जोते जाते हैं और फिर जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है, लाख में कहा! संभव है? लेकिन काँच बड़ा खतरनाक होता है। बड़ी जल्दी टूट जाता है।

मैंने कहा। नाजुंक तो फिर होता ही है लला! कहते–कहते उसे खाँसी आ गई और वह देर तक खाँसता रहा। मुझे लगा उसे दमा है। अवस्था के साथ–साथ उसका शरीर ढल चुका था। उसके हाथों पर और माथे पर नसें उभर आई थीं।

जाने कैसे उसने मेरी शंका भाँप ली और बोला, दमा नहीं है मुझे। फसली खाँसी है। यही महीने–दो–महीने से आ रही है। दस–पंद्रह दिन में ठीक हो जाएगी।

मैं चुप रहा। मुझे लगा उसके अंदर कोई बहुत बड़ी व्यथा छिपी है। मैं देर तक सोचता रहा कि इस मशीन युग ने कितने हाथ काट दिए हैं। कुछ देर फिर शांति रही जो मुझे अच्छी नहीं लगी।

आम की फसल अब कैसी है, काका ? कुछ देर पश्चात मैंने बात का विषय बदलते हुए पूछा।

अच्छी है लला, बहुत अच्छी है, उसने लहककर उतर दिया और अंदर अपनी बेटी को आवाजं दी, अरी रज्जो, लला के लिए आम तो ले आ। फिर मेरी ओर मुखातिब होकर बोला, म़ाफ करना लला, तुम्हें आम खिलाना भूल गया था।

नहीं, नहीं काका आम तो इस साल बहुत खाए हैं।

वाह–वाह, बिना आम खिलाए कैसे जाने दुँगा तुमको?

मैं चुप हो गया। मुझे वे दिन याद हो आए जब वह मेरे लिए मलाई बचाकर रखता था।

गाय तो अच्छी है न काका?मैंने पूछा।

गाय कहा! है, लला! दो साल हुए बेच दी। कहाँ से खिलाता?

इतने में रज्जो, उसकी बेटी, अंदर से एक डलिया में ढेर से आम ले आई।

यह तो बहुत हैं काका! इतने कहाँ खा पाउँगा?मैंने कहा।

वाह–वाह! वह हँस पड़ा, शहरी ठहरे न! मैं तुम्हारी उमर का था तो इसके चौगुने आम एक बखत में खा जाता था।

आप लोगों की बात और है। मैंने उतर दिया।

अच्छा, बेटी, लला को चार–पाँच आम छाँटकर दो। सदूरी वाले देना। देखो लला वैसे हैं?इसी

साल यह पेड़ तैयार हुआ है।

रज्जो ने चार–पाँच आम अंजुली में लेकर मेरी ओर बढ़ा दिए। आम लेने के लिए मैंने हाथ बढ़ाया तो मेरी निगाह एक क्षण के लिए उसके हाथों पर ठिठकगई। गोरी–गोरी कलाइयों पर लाख की चूड़िया! बहुत ही फब रही थीं।

बदलू ने मेरी दृष्टि देख ली और बोल पड़ा, यही आखिरी जोड़ा बनाया था जमींदार साहब की बेटी के विवाह पर। दस आने पैसे मुझको दे रहे थे। मैंने जोड़ा नहीं दिया। कहा, शहर से ले आओ।

मैंने आम ले लिए और खाकर थोड़ी देर पश्चात चला आया। मुझे प्रसन्नता हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी थी। उसका व्यक्तित्व काँच की चूड़ियों जैसा न था कि आसानी से टूट जाए।

–कामतानाथ

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. बचपन में लेखक अपने मामा के गाँव चाव से क्यों जाता था और बदलू काबदलू मामा' न कहकर 'बदलू काका' क्यों कहता था?
2. वस्तु–विनिमय क्या है?विनिमय की प्रचलित पदधति क्या है?
3. 'मशीनी युग ने कितने हाथ काट दिए हैं। –इस पंक्ति में लेखक ने किस व्यथा की ओर संकेत किया है?
4. बदलू के मन में ऐसी कौन–सी व्यथा थी जो लेखक से छिपी न रह सकी।
5. मशीनी युग से बदलू के जीवन में क्या बदलाव आया?

क्हानी से आगे

1. आपने मेले–बाजांर आदि में हाथ से बनी चीजों को बिकते देखा होगा। आपके मन में किसी चीजं को बनाने की कला सीखने की इच्छा हुई हो और आपने कोई कारीगरी सीखने का प्रयास किया हो तो उसके विषय में लिखिए।
2. लाख की वस्तुओं का निर्माण भारत के किन–किन राज्यों में होता है?लाख से चूड़ियों के अतिरिक्त क्या–क्या चीजें बनती हैं?ज्ञात कीजिए।

अनुमान और कल्पना

1. घर में मेहमान के आने पर आप उसका अतिथि–सत्कार कैसे करेंगे?
2. आपको छुट्टियों में किसके घर जाना सबसे अच्छा लगता है ? वहाँ की दिनचर्या अलग कैसे होती है ? लिखिए।
3. मशीनी युग में अनेक परिवर्तन आए दिन होते रहते हैं। आप अपने आस–पास से इस प्रकार के किसी परिवर्तन का उदाहरण चुनिए और उसके बारे में लिखिए।
4. बाज़ार में बिकने वाले सामानों की डिज़ाइनों में हमेशा परिवर्तन होता रहता है। आप इन परिवर्तनों को किस प्रकार देखते हैं?आपस में चर्चा कीजिए।
5. हमारे खान–पान, रहन–सहन और कपड़ों में भी बदलाव आ रहा है। इस बदलाव के पक्ष–विपक्ष में बातचीत कीजिए और बातचीत के आधार पर लेख तैयार कीजिए।

भाषा की बात

1. 'बदलू को किसी बात से चिढ़ थी तो काँच की चूड़ियों से' और बदलू स्वयं कहता है–"जो सुंदरता काँच की चूड़ियों में होती है लाख में कहाँ संभव है? " ये पंक्तियाँ बदलू की दो प्रकार की मनोदशाओं को सामने लाती हैं। दूसरी पंक्ति में उसके मन की पीड़ा है। उसमें व्यंग्य भी है। हारे हुए मन से, या दुखी मन से अथवा व्यंग्य में बोले गए वाक्यों के अर्थ सामान्य नहीं होते। कुछ व्यंग्य वाक्यों को ध्यानपूर्वक समझकर एकत्र कीजिए और उनके भीतरी अर्थ की व्याख्या करके लिखिए।

2. **'बदलू'** कहानी की दृष्टि से **पात्रा** है और भाषा की बात (व्याकरण) की दृष्टि से **संज्ञा** है। किसी भी व्यक्ति, स्थान, वस्तु, विचार अथवा भाव को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा को तीन भेदों में बाँटा गया है **(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा**, जैसे–लला, रज्जो, आम, काँच, गाय इत्यादि **(ख) जातिवाचक संज्ञा**, जैसे–चरित्रा, स्वभाव, वजन, आकार आदि द्वारा जानी जाने वाली संज्ञा। **(ग) भाववाचक संज्ञा**, जैसे–सुंदरता, नाजुक, प्रसन्नता इत्यादि जिसमें कोई व्यक्ति नहीं है और न आकार या वजन। परंतु उसका अनुभव होता है। पाठ से तीना प्रकार की संज्ञाएँ चुनकर लिखिए।

शब्दार्थ

चव – चाह, रुचि, तीव्र इच्छा
स्लाख – सलाई, धातु की छड़
मुगरी – गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने –पीटने के काम आती है
पैतृक – पूर्वजों का, पिता से प्राप्त या पुश्तैनी
खपत – माल की विक्री
व्सतु – पैसों से न खरीदकर एक
ध्वनिमय – वस्तु के बदल दूसरी वस्तु लेना
कसर – घाटा पूरा करना, कमी
नाजुक – कोमल
मनिहार – चूड़ी बनाने वाला
सहन – आँगन
स्मृति–पटल – याददाश्त, याद की तख्ती,
पगड़ी – सिर पर लपेट कर बा़धा जाने वाला लंबा कपड़ा, पाग
मरहम–पट्टी– जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बांधना
मचिया – बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली आदि से बुनी छोटी/चौकोर खाट
मुखातिब – देखकर बात करना
डलिया – बांस का बना एक छोटा पात्र
पुबना – सजना, शोभा देना

3 अपराजिता

कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नही किया। फिर भी हमसे कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वारा खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक ह्वील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती—ठीक जैसे कोई मशीन वटन खटखटाती अपना काम किए चल जा रही हो।

धीरे—धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते—भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल बड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ—साथ धीरे—धीरे मानसिक संतुलन भी खो बैठा। पहले दुःख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा और अब नूरमंज़िल की शरण की है। केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्दिीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल—प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी—कैसी महत्तवकांक्षाएँ।

''मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय माइक्रोबायोलाजी से संबधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?''

''मैडम आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फ़ैलोशिप मिल सकती है?''

यहाँ कभी सामान्य—सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाशं ही सिर पर टूट पड़ा है और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी—बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन से नीचे का पूरा शरीर पोलियों ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डाक्टरेट ली होगी।

''मैडम, मै चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अव स्वंय निबटा लेती हूँ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाई। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थीं कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही समाग्री मेज़ पर उतार सकती थी। किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाने के ही विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डाक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए डॉ. चंद्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रहमम्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ–साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ। 1976 में, जब चंद्रा को डाक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में। अपंग स्त्री–पुरुषों में, इस विषय में डाक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े–से–बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा, ''आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गदरन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।'' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कंठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस तजीवन से तो मौत भली है। मैं निरन्तर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर–उधर देख–भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।

एक वर्ष तक कश्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपर धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठे गई थी। बेंगलूर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कांवेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिन्ता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा वे स्वयं कराती। वे पीरियड दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी–एस.सी. किया, प्राणिशास्त्र में, एम–एस.सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बेंगलूर के प्रख्यात इंस्ट्टियूट ऑफ साँइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफ़ेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता–पिता ने पेंसिलवानियां से व्हील चेयर मँगवा दी जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह–बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध–क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत–विक्षत शरीर में घावों के असंख्य किन्तु आभामंडित भव्य मुद्रा।

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने अपने कढ़ाई–बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता–पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपवने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुसकराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

''मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज़ के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य–चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी।'' किन्तु डॉ. चंद्रा के प्रोफसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान् योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान न पाया।''

चंदा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा–सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं–'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी–बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वंय माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया–लगी कुर्सी के पीछे चक्र–सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विज़य का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्‌भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्‌वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्‌वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्‌वार खोल भी देता है।''

–शिवानी

प्रश्न-अभ्यास

बोध और विचार

1. अपराजिता शब्द का निम्नांकित में से कौन–सा अर्थ है?
   क. जो विकलांग हो ग. जो आपस का न हो
   ख. जिसने हार न मानी हो घ. जो दूसरों से भिन्न हो
2. डॉ. चंद्रा को पहली बार देखकर लेखिका के मन में क्या–क्या भाव उठे?
3. लेखिका ने डॉ. चंद्रा को सामान्य जनों से किन बातों में भिन्न पाया?
4. अपंग चंद्रा को डॉ. चंद्रा बनाने में उसकी माता का क्या योगदान है?
5. लखनऊ के युवक को डॉ. चंद्रा से क्या प्रेरणाएँ लेनी चाहिए?
6. राणा साँगा कौन थे?लेखिका को बरबस उनका स्मरण क्यों हो आया?
7. चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने कैसे पाया?
8. वीर जननी का पुरस्कार किसको मिला?क्यों मिला?
9. पाठ के आधार पर निम्नांकित वाक्य का स्पष्टीकरण करें:–

''ईश्वर सब द्वार का साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है तो दूसरा द्वार खोल देता है।''

भाषा–अध्ययन

1. ''अपराजिता'' शब्द की निम्नांकित में से कौन–सी व्युत्पत्ति सही है?
   क. अपरा+जिता ग. अ+पराजित+आ
   ख. अ+पर+अ+जित+आ घ. अपर+अजिता
2. डॉ. चंद्रा के लिए प्रयुक्त विशेषणों का चयन करें।
3. चुने गए विशेषणों की सहायता से डॉ. चंद्रा का शब्दचित्र अंकित करें।

योग्यता–विस्तार

1. उद्यमी और पुरुषार्थी विकलांगों की जीवनियाँ पत्र–पत्रिकाओं में प्रायः छपती रहती हैं, उनका संकलन करके ''विकलांग विशेषांक'' निकालें।
2. विकलांगों के लिए आयोजित समाराहों को दूरदर्शन–कार्यक्रम में देखें।
3. विकलांगों की समस्याओं पर कक्षा में चर्चा करें।

KF255J

4 दीवानों की हस्ती

हम दीवानों की क्या हस्ती,
हैं आज यहाँ, कल वहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।
आए बनकर उल्लास अभी,
आँसू बनकर बह चले अभी,
सब कहते ही रह गए, अरे,
तुम कैसे आए, कहाँ चले?
किस ओर चले? यह मत पूछो,
चलना है, बस इसलिए चले,
जग से उसका कुछ लिए चले,
जग को अपना कुछ दिए चले,

दो बात कही, दो बात सुनी;
कुछ हँसे और फिर कुछ रोए।
छककर सुख–दुखके घूँटों को
हम एक भाव से पिए चले।

हम भिखमंगों की दुनिया में,
स्वच्छंद लुटाकर प्यार चले,
हम एक निसानी–सी उर पर,
ले असफलता का भार चले।
अब अपना और पराया क्या?
आबाद रहें रुकनेवाले!
हम स्वयं बँधे थे और स्वयं
हम अपने बंधन तोड़ चले।

– भगवतीचरण वर्मा

कविता से

1. कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बनकर बह जाना' क्यों कहा है?
2. भिखमंगों की दुनिया में बरोक प्यार लुटानेवाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हंदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है?
3. कविता में ऐसी कौन–सी बात है जो आपको सबसे अच्छी लगी?

कविता से आगे

– जीवन में मस्ती होनी चाहिए, लेकिन कब मस्ती हानिकारक हो सकती है? सहपाठियों के बीच चर्चा कीजिए।

प्रश्न-अभ्यास

अनुमान और कल्पना

एक पंक्ति में कवि ने यह कहकर अपने अस्तित्व को नकारा है कि हम दीवानों की क्या हस्ती, है आज यहाँ, कल वहाँ चले। "दूसरी पंकित में उसने यह कहकर अपने अस्तित्व को महत्व दिया है कि मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उड़ाते जहा! चले।" यह फाकामस्ती का उदाहरण है। अभाव में भी खुश रहना फाकामस्ती कही जाती है। कविता में इस प्रकार की अन्य पंक्तियाँ भी है उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कविता में परस्पर विरोधी बातें क्यों की गई हैं?

भाषा की बात

संतुष्टि के लिए कवि ने 'छककर' 'जी भरकर' और 'खुलकर' जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इसी भाव को व्यक्त करनेवाले कुछ और शब्द सोचकर लिखिए, जैसे–हँसकर गाकर।

KFB177

शब्दार्थ

हस्ती	–	अस्तित्व
टालम	–	दुनिया, माहौल
स्वच्छंद	–	अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला

5

चिट्ठियों की अनूठी दुनिया

पत्रों की दुनिया भी अजीबो–गरीब है और उसकी उपयोगिता हमेशा से बनी रही है। पत्र जो काम कर सकते हैं, वह संचार का आधुनिकतम सामान नहीं कर सकता है। पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश कहाँ दे सकता है। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है। पत्रों का भाव सब जगह एक–सा है, भले ही उसका नाम अलग–अलग हो। पत्र को उर्दू में खत, संस्कृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उनरम्, जाबू और लेख तथा तमिल में कडिद कहा जाता है। पत्र यादों को सहेजकर रखते हैं, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है। हर एक की अपनी पत्र लेखन कला है और हर एक के पत्रों का अपना दायरा। दुनिया भर में रोज़ करोड़ों पत्र एक दूसरे को तलाशते तमाम

ठिकानों तक पहुँचते हैं। भारत में ही रोज़ साढ़े चार करोड़ चिठियाँ डाक में डाली जाती हैं जो साबित करती हैं कि पत्र कितनी अहमियत रखते हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1953 में सही ही कहा था कि हज़ारों सालों तक संचार का सामान केवल हरकारे रनर्स या फिर तेज़ घोड़े रहे हैं। उसके बाद पहिए आए। पर रेलवे और तार से भारी बदलाव आया। तार ने रेलों से भी तेज़ गति से संवाद पहुँचाने का सिलसिला शुरू किया। अब टेलीफोन, वायरलैस और आगे रेडार–दुनिया बदल रहा है। पिछली शताब्दी में पत्र लेखन ने एक कला का रूप ले लिया। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र

संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। भारत ही नहीं दुनिया के कई देशों में ये प्रयास चले और विश्व डाक संघ ने अपनी ओर से भी काफी प्रयास किए। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्रा लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया। यह सही है कि खास तौर पर बड़े शहरों और महानगरों में संचार सामानों के तेज़ विकास तथा अन्य कारणों से पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है पर देहाती दुनिया आज भी चिट्ठियों से ही चल रही है। फैक्स, ई–मेल, टेलीफोन तथ मोबाईल ने चिट्ठियों की तेज़ी को रोका है पर व्यापारिक डाक की संख्या लगातार बढ़ रही है।

जहाँ तक पत्रों का सवाल है, अगर आप बारीकी से उसकी तह में जाए! तो आपको ऐसा कोई नहीं मिलेगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा या न लिखाया हो या पत्रों का बेसब्री से जिसने इंतजार न किया हो। हमारे सैनिक तो पत्रों का जिस उत्सुकता से इंतजार करते हैं, उसकी कोई मिसाल ही नहीं। एक दौर था जब लोग पत्रों का महीनों इंतजार करते थे पर अब वह बात नहीं। परिवहन सामानों के विकास ने दूरी बहुत घटा दी है। पहले लोगों के लिए संचार का इकलौता सामान चिट्ठी ही थी पर आज और भी सामान विकसित हो चुके हैं। आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों या फिर बड़े–बड़े लेखक, पत्रकारों, उद्यमी, कवि, प्रशासक, संन्यासी या किसान, इनकी पत्रों रचनाएँ अपने आप में अनुसंधान का विषय हैं। अगर आज जैसे संचार सामान होते तो पंडित नेहरू अपनी पुत्री इंदिरा गांधी को फोन करते, पर तब पिता के पत्र पुत्री के नाम नहीं लिखे जाते जो देश के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देते हैं। पत्रों को तो आप सहेजकर रख लेते हैं पर एसएमएस संदेशों को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेजकर रख सकते हैं? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी यादगार या मारोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी हैं। तमाम पत्र देश, काल और समाज को जानने–समझने का असली पैमाना हैं। भारत में आज़ादी के पहले महासंग्राम के दिनों में जो कुछ अंग्रेज़ अफसरों ने अपने परिवारजनों को पत्र में लिखे वे आगे चलकर बहुत महत्व की पुस्तक तक बन गए। इन पत्रों ने साबित किया कि यह संग्राम कितनी जमीनी मज़बूती लिए हुए था। महात्मा गांधी के पास दुनिया भर से तमाम पत्र केवल महात्मा गांधी–इंडिया लिखे आते थे और वे जहा़ि भी रहते थे वहाँ तक पहुँच जाते थे। आज़ादी के आंदोलन की कई अन्य दिग्गज हस्तियों के साथ भी ऐसा ही था। गांधीजी के पास देश–दुनिया से बड़ी संख्या में पत्र पहुँचते थे पर पत्रों का जवाब देने के मामले में उनका कोई जोड़ नहीं था। कहा जाता है कि जैसे ही उन्हें पत्र मिलता था, उसी समय वे उसका जवाब भी लिख देते थे। अपने हाथों से ही ज्यादातर पत्रों का जवाब देते थे। जब लिखते–लिखते उनका दाहिना हाथ दर्द करने लगता था तो वे बाए! हाथ से लिखने में जुट जाते थे। महात्मा गांधी ही नहीं आंदोलन के तमाम नायकों के पत्र गाँव–गाँव में मिल जाते हैं। पत्र भेजनेवाले लोग उन पत्रों को किसी प्रशस्तिपत्र से कम नहीं मानते हैं और

और कई लोगों ने तो उन पत्रों को फ्रेम कराकर रख लिया है। यह है पत्रों का जादू। यही नहीं, पत्रों के आभार पर ही कई भाषाओं में जाने कितनी किताबें लिखी जा चुकी हैं।

वास्तव में पत्र किसी दस्तावेज़ से कम नहीं हैं। अंत के दो सौ पत्र बच्चन के नाम और निराला के पत्र हमको लिख्यौ है कहा तथा पत्रों के आईने में दयानंद सरस्वती समेत कई पुस्तकें आपको मिल जाएगी। कहा जाता है कि प्रेमचंद खास तौर पर नए लेखकों को बहुत प्रेरक जवाब देते थे तथा पत्रों के जवाब में वे बहुत मुस्तैद रहते थे। इसी प्रकार नेहरू और गांधी के लिखे गए रवींद्रनाथ टैगोर के पत्र भी बहुत प्रेरक हैं। 'महात्मा और कवि' के नाम से महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर के बीच सन् 1915 से 1941 के बीच के पत्राचार का संग्रह प्रकाशित हुआ है जिसमें बहुत से नए तथ्यों और उनकी मनोदशा का लेखा–जोखा मिलता है। पत्रा व्यवहार की परंपरा भारत में बहुत पुरानी है। पर इसका असली विकास आज़ादी के बाद ही हुआ है। तमाम सरकारी विभागों की तुलना में सबसे ज्यादा गुडविल डाक विभाग की ही है। इसकी एक खास वजह यह भी है कि यह लोगों को जोड़ने का काम करता है। घर–घर तक इसकी पहुँच है। संचार के तमाम उन्नत सामानों के बाद भी चिट्ठी–पत्री की हैसियत बरकरार है। शहरी इलाकों में आलीशान हवेलियाँ हों या फिर झोपड़पटियों में रह रहे लोग, दुर्गम जंगलों से घिरे गाँव हों या फिर बर्फबारी के बीच जी रहे पहाड़ों के लोग, समुद्र तट पर रह रहे मछुआरे हों या फिर रेगिस्तान की ढाँणियों में रह रहे लोग, आज भी खतों का ही सबसे अमिाक बेसब्री से इंतजार होता है। एक दो नहीं, करोड़ों लोग खतों और अन्य सेवाओं के लिए रोज भारतीय डाकघरों के दरवाज़ों तक पहुँचते हैं और इसकी बहु आयामी भूमिका नज़र आ रही है। दूर देहात में लाखों गरीब घरों में चूल्हे मनीआर्डर अर्थव्यवस्था से ही जलते हैं। गाँवों या गरीब बस्तियों में चिट्ठी या मनीआर्डर लेकर

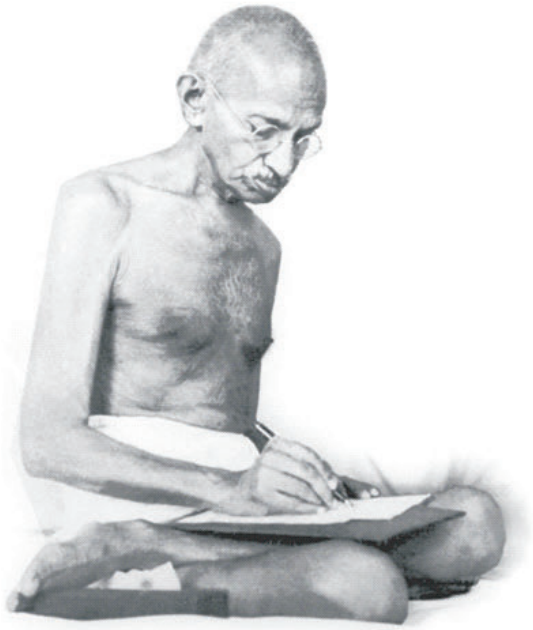

पहुँचनेवाला डाकिया देवदूत के रूप में देखा जाता है।

—अरविंद कुमार सिंह

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?
2. पत्र को खत, कागद, उनरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइए।
3. पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या—क्या प्रयास हुए? लिखिए।
4. पत्र मारोहर हो सकते हैं लेकिन एसएमएस क्यों नहीं ? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।
5. क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई—मेल, टेलीफोन तथा मोबाईल ले सकते हैं?

पाठ से आगे

1. किसी के लिए बिना टिकट सादे लिफाफे पर सही पता लिखकर पत्र बैरंग भेजने पर कौन—सी कठिनाई आ सकती है?पता कीजिए।
2. पिन कोड भी संख्याओं में लिखा गया एक पता है, वैसे?
3. ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गांधी को दुनिया भर से पत्र 'महात्मा गांधी इंडिया' पता लिखकर आते थे?

अनुमान और कल्पना

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'भगवान के डाकिए' आपकी पाठ्यपुस्तक में है। उसके आधार पर पक्षी और बादल को डाकिए की भांति मानकर अपनी कल्पना से लेख लिखिए।
2. संस्कृत साहित्य के महाकवि कालिदास ने बादल को संदेशवाहक बनाकर 'मेघदूत' नाम का काव्य लिखा है। 'मेघदूत' के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए।

3. पक्षी को संदेशवाहक बनाकर अनेक कविताएँ एवं गीत लिखे गए हैं। एक गीत है 'जा–जा रे कागा विदेशवा, मेरे पिया से कहियो संदेशवा'। इस तरह के तीन गीतों का संग्रह कीजिए। प्रशिक्षित पक्षी के गले में पत्र बाँधकर निर्माारित स्थान तक पत्रा भेजने का उल्लेख मिलता है। मान लीजिए आपको एक पक्षी को संदेशवाहक बनाकर पत्रा भेजना हो तो आप वह पत्रा किसे भेजना चाहेंगे और उसमें क्या लिखना चाहेंगे।

4. केवल पढ़ने के लिए दी गई रामदरश मिश्र की कविता 'चिट्ठियाँ' को ध्यानपूर्वक पढ़िए और विचार कीजिए कि क्या यह कविता केवल लेटर बॉक्स में पड़ी निर्धारित पते पर जाने के लिए तैयार चिट्ठियों के बारे में है? या रेल के डिब्बे में बैठी सवारी भी उन्हीं चिट्ठियों की तरह हैं जिनके पास उनके गंतव्य तक का टिकट है। पत्र के पते की तरह और क्या विद्यालय भी एक लेटर बाक्स की भाँति नहीं है जहाँ से उत्तीर्ण होकर विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों में चले जाते हैं? अपनी कल्पना को पंख लगाइए और मुक्त मन से इस विषय में विचार–विमर्श कीजिए।

भाषा की बात

1. किसी प्रयोजन विशेष से संबंधित शब्दों के साथ पत्र शब्द जोड़ने से कुछ नए शब्द बनते हैं, जैसे प्रशस्ति पत्र, समाचार पत्र। आप भी पत्र के योग से बननेवाले दस शब्द लिखिए।

2. 'व्यापारिक' शब्द व्यापार के साथ 'इक' प्रत्यय के योग से बना है। इक प्रत्यय के योग से बननेवाले शब्दों को अपनी पाठ्यपुस्तक से खोजकर लिखिए।

3. दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर सीमा कहते हैं जैसे रवीन्द्र रवि+इन्द्र। इस संधि में इ इ त्र ई हुई है। इसे दीर्घ संधि कहते हैं। दीर्घ स्वर संधि के और उदाहरण खोजकर लिखिए। मुख्य रूप से स्वर संमियाँ चार प्रकार की मानी गई हैं दीर्घ, गुण, वृणि और यण। 'स्व या दीर्घ अ, इ, उ के बाद `स्व या दीर्घ अ, इ, उ, आ आए तो ये आपस में मिलकर क्रमशः दीर्घ आ, ई, उफ हो जाते हैं, इसी कारण इस सीमा को दीर्घ संमि कहते हैं जैसे संग्रह . आलय त्र संग्रहालय, महा . आत्मा महात्मा।

इस प्रकार के कम–से–कम दस उदाहरण खोजकर लिखिए और अपनी शिक्षिका/शिक्षक को दिखाइए।

शब्दार्थ

अजीबो–गरीब	–	अनोखा	प्रशस्ति पत्र	–	प्रशंसा पत्र
एस्एमएस	–	लघु संदेश सेवा	मुस्तैद	–	तत्पर
सिलसिला	–	आरंभ होना, रास्ता खुलना	दस्तावेज़	–	प्रमाण संबंमी कागजात, प्रमाण पत्रा
अहमियत	–	महत्व	गुडविल	–	सुनाम, अच्छी छवि
हरकारा	–	दूत, डाकिया, संदेश पहु!चाने वाला	हैसियत	–	दरजा
			आलीशान	–	शानदार
आवाजाही	–	आना–जाना	ढाँणी	–	अस्थाई निवास, क्च्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो
तह	–	गहराई			

KFJW8U

चिट्ठियाँ

(केवल पढ़ने के लिये)

लेटरबक्स में पड़ी हुई चिट्ठियाँ
अनंत सुख–दुख वाली अनंत चिट्ठियाँ
लेकिन कोई किसी से नहीं बोलती
सभी अकेले–अकेले
अपनी मंजिल पर पहुँचने का इंतजार करती हैं।
कैसा है यह एक साथ होना
दूसरे के साथ हँसना न रोना
क्या हम भी लेटरबक्स की
चिट्ठियाँ हो गए हैं।

– रामदरश मिश्र

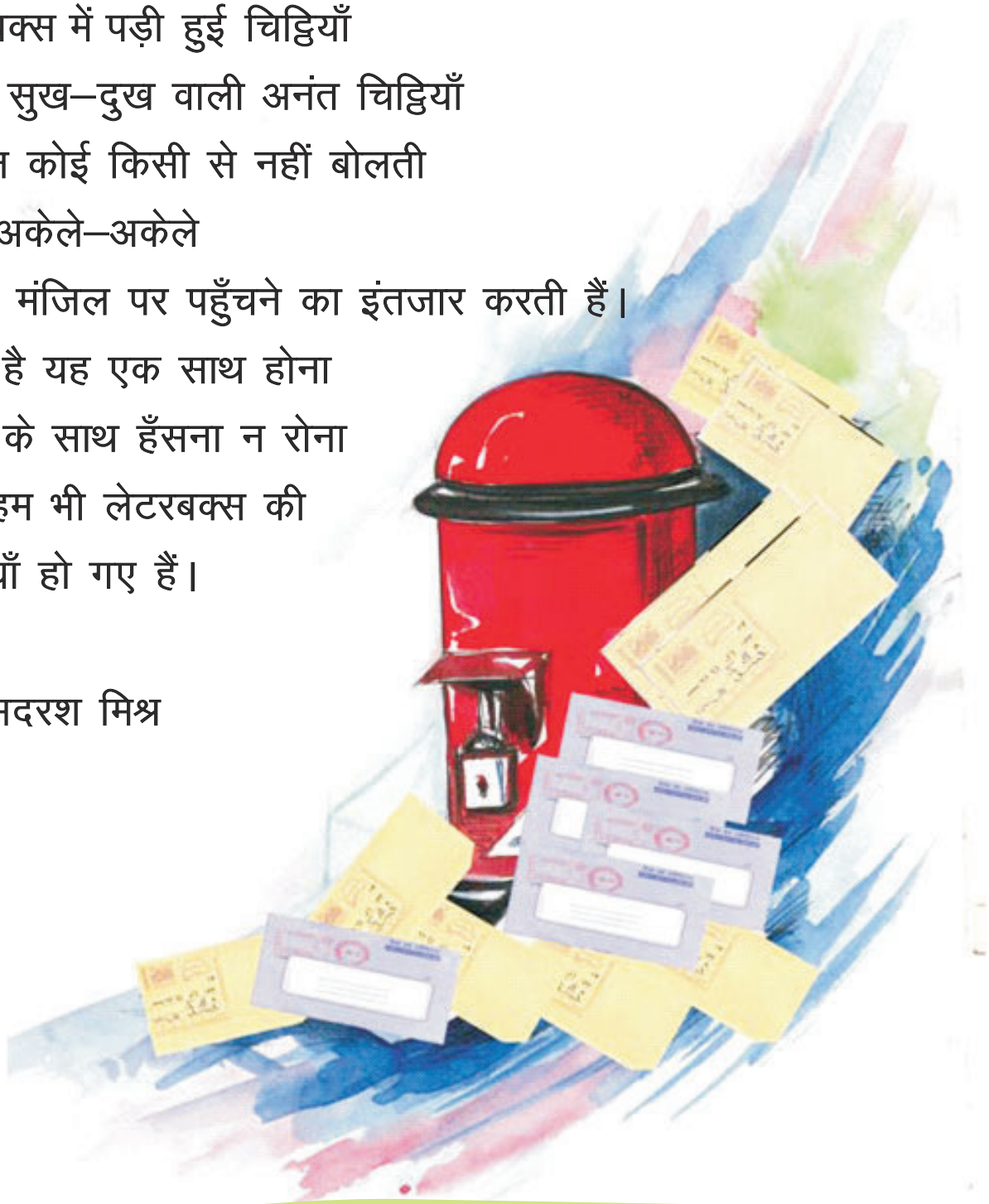

6

भगवान के डाकिए

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।
हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।
और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रश्न-अभ्यास

कविता से

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है?स्पष्ट कीजिए।
2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिठिठयों को कौन–कौन पढ़ पाते हैं?सोचकर लिखिए।
3. किन पंक्तियों का भाव है
   क – पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।
   ख – प्रकृति देश–देश में भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।
4. पक्षी और बादल की चिठिठयों में पेड़–पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?
5. एक देश की धरती दूसरे देश को सुगंध भेजती है कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

1. पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान–प्रदान को आप किस दृष्टि से देख सकते हैं?
2. आज विश्व में कहीं भी संवाद भेजने और पाने का एक बड़ा साधन इंटरनेट है। पक्षी और बादल की चिट्ठियों की तुलना इंटरनेट से करते हुए दस पंक्तिया! लिखिए।
3. 'हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका' क्या है?इस विषय पर दस वाक्य लिखिए।

अनुमान और कल्पना

डाकिया, इंटरनेट के वर्ल्ड वाइड वेब ;डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू. तथा पक्षी और बादल इन तीनों संवादवाहकों के विषय में अपनी कल्पना से

एक लेख तैयार कीजिए। लेख लिखने के लिए आप 'चिठिठयों की अनूठी दुनिया' पाठ का सहयोग ले सकते हैं।

शब्दार्थ

बाँचना	–	पढ़ना, सस्वर पढ़ना
आँकना	–	अनुमान करना
पाँख	–	पंख, पर
सौरभ	–	सुगंध, सुबास

7 प्लास्टिक जनित प्रदूषण
(लघु नाटिका)

KG3NC5

दृश्य सरकारी विधालय का परिसर

पात्र–परिचय

प्रधानचार्य	:	डा0 भूषण
अध्यापिका	:	श्रीमति अर्चना
विधार्थी	:	संख्या एक
विधार्थी	:	संख्या दो
विधार्थी	:	संख्या तीन
विधार्थी	:	संख्या चार

विधालय में आज हलचल है सभी विधार्थी उत्सुक्त है, क्योंकि आज उनके विधालय में 'मंत्री महोदय' (शिक्षा) पधार रहे हैं। सभी विधार्थी अपनी–अपनी तैयारी में जुटे हुए हैं।

(गीत, संगीत, नृत्य, नाटिका, वाद–विवाद आदि) सभी की उत्सुक्ता का एक कारण सही भी है कि आज एक नवीन विषय गम्भीर है इसलिए विधार्थी जी जान से तैयारी में लगे है कि कही मंत्री महोदय के सामने उनका कार्यक्रम फीका न पड़ जाए। अध्यापक वर्ग तो विशेष रुप से तैयारी में थे।

डा0 भूषण :– (प्रधानाचार्य का आगमन–सारे कार्यक्रम की देखते हुए अर्चना जी (अध्यापिका) के सम्बोधिका करते हुए) आप का नाटक पूरी तरहा से तैयार है कि नहीं विषय बहुत कठिन चुना है आपने 'प्लास्टिक जनित प्रदूषण'।

अर्चना :– (अधियापिका) जी जनाब, आज के दौर में समाज को प्राप्त सुविधा को त्यागने के लिए कहना बहुत जटिल कार्य है 'प्लास्टिक' तो आज घर–घर में विधमान है और सरकार को उसके फायदा भी बहुत है। आम लोगों की जीवन भी सरल हो गया है

प्लास्टिक के आने से घर की रसोई से लेकर आफिस तक, शादियों में, घरों की सजावट में इसका बहुत योगदान है हम इस के उपयोग को कैसे नकार सकते है?

प्रधानाचार्य :– क्या आप का विषय समझ में आएगा सभी को?

अर्चना :– सर विषय तो गम्भीर है, कठिन भी है और लोगों को इस के दुष्परिणाम से अवगत कराना ही इस नाटिका का उद्देश्य है।

मंत्री महोदय जी के आते ही विधालय परिसर में हलचल शुरु हो जाती हैं फूलों से प्रधानाचार्य मंत्री जी का स्वागत करते है। कार्यक्रम का आरम्भ नाटिका से होता है।

नाटक की प्रस्तुती विधालय के आठवीं कक्षा के विधार्थी तथा अध्यापिका अर्चना जी के द्वारा होती है जिसमें विद्यार्थियों को प्लास्टिक जनित प्रदूषण के बारे में पढ़ा रही है।

दृश्य : कक्षा आठवी के विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए अध्यापिका

श्रीमति अर्चना (अध्यापिका) का मंच पर आगमन और बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहती है कि प्यारे बच्चों आज हम प्लास्टिक से उत्पन्न प्रदूषण को लेकर एक लघु नाटिका प्रस्तुत करने जा रहे हैं।

बच्चों आप को पता है कि रोज मरा की जिन्दगी में इस्तेमाल होने वाले प्लास्टिक का अर्थ क्या है और इसके इस्तेमाल से क्या–क्या बीमारियाँ हो सकती है इससे प्रदूषण कैसे फैलता है?

विधार्थी संख्या :– अध्यापिका जी इस प्लास्टिक ने तो हमारी बहुत सी विधायों को सुविधा में बदल दिया है फिर यह खराब कैसे ?श्रीमति अर्चना (अध्यापिका) आज मैं आप को इसी विषय में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी देना चाहती हूँ।

विधार्थी (संख्या 2) :– उत्सुक्ता से ! अध्यापिका जी कृपा यह बताएं कि यह प्लास्टिक क्या है?इसका अर्थ तथा उससे कौन–कौन से रोग उत्पन्न हो सकते है?

श्रीमति अर्चना (अध्यापिका) प्यारे बच्चो !

प्लास्टिक, (का अर्थ) एक ग्रीक शब्द 'प्लाटीकोस' से बना है जिसका

सीधा तात्पर्य है आसानी से नमनीम पदार्थ, जो किसी भी आकार में ढाला जा सकता है।

प्लास्टिक मुख्यतः पैट्रोलियम पदार्थों से निकलने वाले कृत्रिक रेजिन से बनाया जाता है रेजिन में अमोनिया एवं बेंजीन को मिलाकर प्लास्टिक के मोनामर बनाए जाते है। इसमें कलोरीन फुलुओरीन, कार्बन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन आक्सीजन एवं सल्फर के अणु होते है लम्बें समय तक अपघटित न होने के अलावा भी प्लास्टिक अनेक अन्य प्रभाव छोड़ता है जो मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं।

विधार्थी (संख्या 3) हाथ उठा कर अध्यापिका जी हमारे स्वास्थ्य के लिए यह (प्लास्टिक) कहां तक हानिकारक है क्या आप हमें उदाहरण देकर बना सकती है ?

अध्यापिका (अवश्य) उदाहरण स्वरुप पाइपों खिड़कियों और दरवाजों के निर्माण में प्रयुक्त पी0 वी0 सी0 प्लास्टिक विनाइल क्लोराइट से बनाया जाता है और इससे रसामन मस्तिष्क एवं यकृत में कैंसर पैदा कर सकता है मशीनों की पैकिंग बनाने के लिए अत्यन्त कठोर पॉलीकार्बोनेट प्लास्टिक फॉस्जीन बिसफीथल मौगिकों से प्राप्त किए जाते हैं। उनके एक अवभव फौस्जीन अत्यन्त विषैली व दमघोटू गैस है। फार्मेल्डीहाइड अनेक प्रकार के प्लास्टिक के निर्माण में प्रयुक्त होता है। यह रसायन त्वचा पर दाने उत्पन्न कर सकता है। कई दिनों तक उसे सम्पर्क में बने रहने से दमा तथा सांस सम्बन्धी बीमारियाँ हो सकती है।

फिर भी बच्चों क्यों आप जानते है कि इतनी बीमारियों के बाद भी विज्ञान की देन में प्लास्टिक का कम महत्व नहीं। 1970 के दशक से प्लास्टिक का प्रभाव इतना बढ़ा गया है कि उसका औधौगिक तथा घरेलु क्षेत्र में उपयोग अप्रत्याशित रूप से बढ़ा। इसका मुख्य कारण है यह बहुत सुविधाजनक हो गया है। पीतल और ताँबे जैसी महँगी और कठिनता से प्राप्त होने वाली वस्तुओं की अपेक्षा प्लास्टिक अधिक सस्ता और सहज वस्तु दिखाई देता है। सस्ता, हल्का, ताप–विधुत कंपन–शोर–प्रतिरोधी तथा कम जगह घेरने वाला पदार्थ होने के कारण औद्योगिक कार्यो में धातुओं की जगह इसने ले ली है।

साथ ही, वाहन, इलेक्ट्रॉनिक्स, दूरसंचार कृषि उपकरण तथा अन्य आवश्यक

कार्यों में भी प्लास्टिक को प्रतिनिधित्व मिला। विश्व में औसतन प्लास्टिक की खपत 15 किलो प्रतिव्यक्ति की तुलना में भारत में यह खपत प्रति व्यक्ति लगभग 1 किलो है। इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट जिसमें ईपॉक्सी प्रिंटेड सर्किट बोर्ड, चप्पल, टी॰ वी॰ कैबिनेट, टेपरिकॉर्डर के गियरबॉक्य, प्रकाश करने वाले स्त्रोत बटन इत्यादि शामिल हैं।

(विधार्थी बहुत ही जिज्ञासा से अध्यापिका की बात सुन रहे हैं विधार्थी (संख्या 4) अध्यापिका जी फिर तो आप को यह भी पता होगा कि भारत और विश्व में 'प्लास्टिक' कितना निकलता होगा। कृपा हमें बताएं–

(विधार्थियों के अलावा विद्यालय में बैठे गुरूजन, मंत्री महोदय, तथा बच्चों के माता–पिता भी इस नाटिका का बहुत ध्यान से सुन और देख रहे थे।)

अर्चना (अध्यापिका) बच्चों क्या आप जानते है कि भारत में प्रतिवर्ष 700 टन प्लास्टिक निकलता है जबकि ऐसे प्लास्टिक अपशिष्ट की मात्रा विश्व में 7000 टन है। सन् 2001–2002 में भारत में प्लास्टिक की मांग 4.3 मिलटन थी जो प्रतिवर्ष बढ़ने की सम्भावना है वर्तमान में भारत में प्लास्टिक का बाजार 2500 करोड़ रुपए है। प्लास्टिक के उत्पादन की वृद्धि और इसकी विविध विशेषताओं के कारण आधुनिक युग में इसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है। टिकाऊपन, मनभावन रंगों में उपलब्धता और विविध आकार प्रकारों में मिलने के कारण इसका प्रयोग आज जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। बाजार में खरीददारी के लिए रंग–बिरंगे कैरी बैग से लेकर रसोईघर के बर्तन, कृषि के उपकरण, परिवहन वाहन, जल–वितरण, रक्षा उपकरण एवं इलेक्ट्रानिक्स, सहित अनेक क्षेत्रों में आज प्लास्टिक का बोल बाला है यही नहीं वैज्ञानिकों ने मनुष्य का जो कृत्रिम हृदय बनाया है, वह भी प्लास्टिक से ही बनाया है।

विद्यार्थी (से. 1) हैरानी है। अध्यापिका जी कि इस प्लास्टिक के उपयोग के बाद इसका क्या होता है हमें यह जानने की बहुत उत्सुक्ता है। कृपा बताएं–

अध्यापिका (श्रीमति उर्चना) क्यों नहीं?यह आपके साथ–साथ सभी को समझना चाहिए कि प्लास्टिक की तमाम खूबियों के बावजूद उपयोग के बाद इसे फेंक दिया जाता है तो अन्य कचरों की तरह आसानी से नष्ट नहीं होता। एक लम्बे समय तक

अपघटित न होने के कारण यह लगातार एकत्रित होता जाता है और अनेक समस्याओं को जन्म देता है। इसके उपभोग के विभिन्न तरीकों से लेकर उत्पादन की प्रतिक्रयाओं के समय जिन गैसों का रिसना शुरू होता है उससे श्रमिकों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता ही है। इसके साथ ही साथ पर्यावरण भी दुष्प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है।

इसके निर्माता यही भलीभाँति जानते हैं कि इन विषैले रसायनों से यहाँ वातावरण भी विषैला हुए बिना नहीं रहता है फिर भी इसका उपयोग कम नहीं है।

प्लास्टिक का कोई भी रूप चाहे वह थैलियों के रूप में क्यों न हो उपयोगोपरान्त इधर–उधर गड्ढ़ों और नालियों में फेंक दी जाती है। इनसे प्रदूषण फैलता है। ये नालियों और गड़ढों में फंसकर उन्हें बन्द कर देती है। इन्हें विनष्ट करना कठिन होता है। सीवर चोक की जितनी घटनाएं होती हैं उनमें 40 प्रतिशत पोलीथीन बैग की वजह से होती है।

विद्यार्थी (संख्या 2) अध्यापिका जी क्या इस प्लास्टिक कचरे को ठिकाने लगाने का कोई उपाय नहीं है।

अध्यापिकाः शाबाश, तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है उपाय एक नहीं तीन–तीन हैं।

पहला उपाय– आमतौर पर प्लास्टिक के न सड़ने की प्रवृति को देखते हुए इसे गड़ढो में भर दिया जाता है।

दूसरा उपायः प्लास्टिक को जलाया जाता है, लेकिन यह तरीका बहुत प्रदूषणकारी है।

(प्लास्टिक जलने से कार्बन डाईऑक्साइड गैस निकलती है जो वायुमंडल की 'ओजोन' परत के लिए नुकसानदायक है)

तीसरा और सर्वाधिक चर्चित उपायः प्लास्टिक का पुनः चक्रण है। पुनः चक्रण का मतलब प्लास्टिक अपशिष्ट से पुनः प्लास्टिक प्राप्त करके प्लास्टिक की नई चीजे बनाना। (प्लास्टिक पुन, चक्रण की शुरूआत सर्वप्रथम सन् 1970 में कैलीफोर्निया की एक फर्म ने की)

विद्यार्थी (संख्या 3) अध्यापिका जी क्या इससे पर्यावरण पर भी प्रभावित होता है?

अध्यापिकाः (अर्चना जी) पर्यावरण और मानव दोनों ही एक दूसरे पर आधारित है और

दोनों को एक दूसरे के नुक्सान और फायदा भी होता है। (बच्चों विस्तार से सुनो) जर्मनी के पर्यावरण वैज्ञानिक के अनुसार यदि 5000 पोलीथीन बैग्स तैयार किए जाते हैं तो 17 किलो सल्फर डाईऑक्साइड गैस वायुमंडल में घुल जाता है। इसके अतिरिक्त मोनो ऑक्साईड नाअइट्रोजन और हाइड्रोकार्बनस का वायु में रिसाव होता है और पानी में कुछ जहरीले पदार्थ भी आकर मिलते हैं। इसी प्रकार जब फाइबर बनाये जाते हैं तो कम से कम 13 किलो नाइट्रोजन आक्साइड और 12 किलो सल्फर डाईआक्साइड निकलकर वायुमंडल में मिलती है। गैसों से पेड़–पौधों एवं फसलों को नुकसान पहुँचता है। उनकी बाढ़ प्राकृतिक तरीके से नहीं हो पाती है। इस प्रकार प्लास्टिक के द्वारा पर्यावरण भी प्रभावित होता है।

पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुँचाने के साथ–साथ पशु धन को भी बहुत नुकसान पहुँचा है। सन् 2000 में लखनऊ शहर में गायों के पेट का आपरेशन कर आठ से दस किलो तक प्लास्टिक कचरा निकाला गया। कस्बों, शहरों एवं महानगरों में यहाँ प्रदूषण फैल रहा है वहाँ नदियाँ, तालाब व झीलें भी प्रदेषित हो रही है। जलीय पक्षियों और पछलियों पर भी इनका प्रभाव अछूता नही है।

विद्यार्थी (संख्या) अध्यापिका जी क्या भारत सरकार ने प्लास्टिक के दुष्प्रभावों पर कोई रोक या कानून नहीं बनाया है?

अध्यापिकाः बच्चों आप को जानकर बहुत प्रसन्नता होगी कि देश के विभिन्न भागों में प्लास्टिक के दृष्प्रभावों के प्रति नागरिक जागृत होकर इसके इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने हेतु आन्दोलनरत है। भारत में केन्द्रीय सरकार ने प्लास्टिक मैन्यूफैक्चर एण्ड यूसेज रूल्स के अन्तर्गता 1999 में प्रतिबंध लगाया है जिसमें पालन न करने पर राज्यों द्वारा छः माह की कड़ी सजा के प्रावधान किए जाने, उद्योगों की बिजली काट दिए जाने और पालन न किए जाने की स्थिति में प्रतिष्ठान बन्द किये जाने जैसे प्रावधान है। (2 अक्टूबर, 2001) इन नियमों का उल्लंघ्न करने पर 3 महीने से एक वर्ष की कैद अथवा 25,000 रूपए का जुर्माना अथवा दोंनो एक दण्ड स्वरूप दिए जा सकते हैं। हमारे देश में कानूनों की तो कमी नहीं है, कमी है तो बस उन्हें सख्ती से लागू करने की। बच्चों आशा है कि मेरी दी हुई

जानकारी से आप का ज्ञान बढ़ा होगा। अब मैं आप से भी यह उम्मीद रखती हूँ कि आप भी प्लास्टिक का इस्तेमाल सोच समझ कर करेंगे। और अपने आस–पास के क्षेत्र में अन्य लोगों को भी जानकारी देंगे (प्लास्टिक जनित प्रदूषण की)

विद्यार्थी: (काफी उत्साहित हो कर)

धन्यवाद अध्यापिका जी आज आप ने जो हमें ज्ञान दिया है हम आपके आभारी हैं। हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि इस कार्य में हम सरकार को पूरा साथ देंगें।

लघु नाटिका की समाप्ति पर सभी श्रोतागण प्रसन्न होते हैं तालियों की गूंज से पात्रों का हौंसला बढाते हैं।

मंत्री महोदय भी प्रसन्न हो कर सभी पात्रों को पुरस्कार देकर उनकी हौंसला बढ़ाते हैं।

समाप्ति

प्रश्न अभ्यास

प्र01 प्रस्तुत लघु नाटिका का नाम क्या है?

प्र02 'प्लास्टिक' किस ग्रीक शब्द से निकला है?

प्र03 'प्लास्टिक से कौन से रसायन निकलते हैं किन्हीं दो का नाम लिखें।'

प्र04 'प्लास्टिक' के दृष्परिणाम क्या है?

प्र05 प्लास्टिक जनित प्रदूषण को ठिकाने लगाने के कौन–कौन से उपाय है।

प्र06 इस प्रदूषण से कौन–कौन सी बीमारियाँ जन्म लेती हैं?

प्र07 प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरूआत किस देश ने की थी और कब?

प्र08 केन्द्र सरकार ने किस सन् में प्लास्टिक जनित प्रदूषण को रोकने के नियम बनाए थे।

2 **रिक्त स्थान भरो:**

1 विद्यालय में ..... के आने से हलचल मची हुई थी।

2 अध्यापिका ..... ने लघु नाटिका प्रचार करवाई थी।

3 नाटक में ..... पात्र थे।

4 प्लास्टिक एक ग्रीक शब्द ..... से बना है।

5 प्लास्टिक पुनः चक्रण की शुरूआत सर्वप्रथम सन् ..... में ..... की एक फर्म ने की।

भाषा, अध्ययन

3 शब्द – अर्थ

1 नमनीय – आर्द्र, गीला

2 कृत्रिम – बनावटी

3 प्रवृत्ति – स्वभाव

4 प्रतिबंध – रोक

5 चक्रण – पुनर्निमाण

भाषा–अध्ययन में अध्यापिका शब्दों के अर्थ समझा कर विद्यार्थियों को उसे वाक्य में परिवर्तित करना सिखाएगी।

योग्यता – बिस्तार

1 इस पाठ को देख कर और सुन कर विद्यार्थी अपने–अपने मोहल्ले में प्लास्टिक के दुष्परिणामों से सबको अवगत कराएंगे।

8

क्या निराश हुआ जाए

मेरा मन कभी–कभी बैठ जाता है। समाचार–पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप–प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही उँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा–चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते?यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिंता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है जिसका सपना तिलक और गांधी ने देखा था?रवींद्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान संस्कृति–सभ्य भारतवर्ष किस अतीत के गंहर में डूब गया?आर्य और द्रविड़, हिंदू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शो की मिलन–भूमि 'मानव महा–समुद्र' क्या सूख ही गया?मेरा मन कहता है ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले–भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा प़ फरेब का रोज़गार करनेवाले फल–फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है, उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक गुण स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ–मोह, काम–क्रोध आदि विचार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुदि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत बुरा आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि–कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे–कानून बनाए गए हैं जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यो में लगना है, उनका मन सब समय पवित्रा नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख–सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के उपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर–भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज़ है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सचाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं लेकिन नष्ट नहीं हुए हैं। आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीज़ों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं

है कि हम ऐसी चीज़ों का गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से मान या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करके उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात है, अच्छाई में उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाए! ऐसी घटती हैं जिन्हें उजागर करने से लोक–चित्र में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपये का नोट दिया और मैं जल्दी–जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेक्ड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपये रख दिए और बोला, यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा। उसके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया से सचाई और ईमानदारी लुप्त हो गई है, वैसी अनेक अवांछित घटनाए! भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है। एक बार मैं बस में यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी और तीन बच्चे भी थे। बस में

कुछ खराबी थी, रुक–रुककर चलती थी। गंतव्य से कोई आठ किलोमीटर पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर उतर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह–तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूटा गया था। परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी–पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। उपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर मारने–पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने

देखने लगा और बोला, हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे। डर तो मेरे मन में था पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है। परंतु यात्री इतने घबरा गए कि मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।

मैं भी बहुत भयभीत था पर ड्राइवर को किसी तरह मार–पीट से बचाया। डेढ़–दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्रांइवर को मारा तो नहीं पर उसे बस से उतारकर एक जगह घेरकर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है तो पहले ड्राईवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। मेरे गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा,

कहा, अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस बस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है। फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, पंडित जी, बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया। यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्रांइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया–माया रह ही नहीं गई! जीवन में जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज़ मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे पर संदेह न करू! ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है, लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

–हजारी प्रसाद द्विवेदी

प्रश्न-अभ्यास

आपके विचार से

1. लेखक ने स्वीकार किया है कि लोगों ने उन्हें भी धोखा दिया है फिर भी वह निराश नहीं है। आपके विचार से इस बात का क्या कारण हो सकता है?
2. समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविज़न पर आपने ऐसी अनेक घटनाएँ देखी–सुनी होंगी जिनमें लोगों ने बिना किसी लालच के दूसरों की सहायता की हो या ईमानदारी से काम किया हो। ऐसे समाचार तथा लेख एकत्रित करें और कम–से–कम दो घटनाओं पर अपनी टिप्पणी लिखें।
3. लेखक ने अपने जीवन की दो घटनाओं में रेलवे के टिकट बाबू और बस कंडक्टर की अच्छाई और ईमानदारी की बात बताई है। आप भी अपने या अपने किसी परिचित के साथ हुई किसी घटना के बारे में बताइए जिसमें किसी ने बिना किसी स्वार्थ के भलाई, ईमानदारी और अच्छाई के कार्य किए हों।

पर्दाफाश

1. दोषों का पर्दाफ़ाश करना कब बुरा रूप ले सकता है?
2. आजकल के बहुत से समाचार पत्र या समाचार चैनल 'दोषों का पर्दाफ़ाश' कर रहे हैं। इस प्रकार के समाचारों और कार्यक्रमों की सार्थकता पर तर्क सहित विचार लिखिए?

कारण बताइए

निम्नलिखित के संभावित परिणाम क्या–क्या हो सकते हैं?आपस में चर्चा कीजिए, जैसे–ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है। परिणाम – भ्रष्टाचार बढ़ेगा।

1. सचाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। .....
2. झूठ और फरेब का रोज़गार करने वाले फल–फूल रहे हैं। .....
3. हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम। .....

दो लेखक और बस यात्राा

आपने इस लेख में एक बस की यात्रा के बारे में पढ़ा। इससे पहले भी आप एक बस यात्रा के बारे में पढ़ चुके हैं। यदि दोनों बस–यात्राओं के लेखक आपस में मिलते तो एक–दूसरे को कौन–कौन सी बातें बताते ? अपनी कल्पना से उनकी बातचीत लिखिए।

सार्थक शीर्षक

1. लेखक ने लेख का शीर्षक 'क्या निराश हुआ जाए' क्यों रखा होगा?क्या आप इससे भी बेहतर शीर्षक सुझा सकते हैं?
2. यदि 'क्या निराश हुआ जाए' के बाद कोई विराम चिन्ह लगाने के लिए कहा जाए तो आप दिए गए चिन्नहो में से कौन–सा चिन्ह लगाएँगे? अपने चुनाव का कारण भी बताइए। – , । . ! ?. – , ... ।

आदर्श की बातें करना तो बहुत आसान है पर उन पर चलना बहुत कठिन है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? तर्क सहित उतार दीजिए।

सपनों का भारत

हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

1. आपके विचार से हमारे महान विद्वानों ने किस तरह के भारत के सपने देखे थे? लिखिए।
2. आपके सपनों का भारत कैसा होना चाहिए?लिखिए।

भाषा की बात

1. दो शब्दों के मिलने से समास बनता है। समास का एक प्रकार है द्वंद्व समास। इसमें दोनों शब्द प्रधान होते हैं। जब दोनों भाग प्रधान होंगे तो एक–दूसरे में द्वंद्व; स्पर्ध, होड़ की संभावना होती है। कोई किसी से पीछे रहना नहीं चाहता, जैसे –चरम और परम, चरम–परम, भीरु और बेबस, भीरु–बेबस। दिन और रात, दिन–रात। 'और' के साथ आए शब्दों के जोड़े को 'और' हटाकर ;–योजक चिन्ह भी लगाया जाता है। कभी–कभी एक साथ भी लिखा जाता है। द्वंद्वसमास के बारह उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

2. पाठ से तीनों प्रकार की संज्ञाओं के उदाहरण खोजकर लिखिए।

KGCJDS

शब्दार्थ

धर्मभीरु	–	जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरनेवाला
पर्दाफाश	–	भेद खोलना, दोष प्रकट करना
उजागर	–	प्रकट करना
गंतव्य	–	स्थान जहाँ किसी को जाना हो
ढाँढ़स	–	दिलासा, धीरज
श्रमजीवी	–	श्रम से जीविका
आचरण	–	चरित्र, चालचलन
गंतव्य	–	मंजिल, लक्ष्य
दोषोदघाटन	–	दोष बताना
चरम	–	अंतिम, आखिरी

9

कामचोर

बड़ी देर के वाद–विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे–मोटे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के !

''तुम लोग कुछ नहीं। इतने सारे हो और सारा दिन उधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।''

और सचमुच हमें खयाल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते? हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए हमने तुरंत हिल–हिलाकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने में धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध हो गया। सुराहियाँ उधर लुढ़कीं। मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

'यह भला काम करेंगे।' अम्मा ने निश्चय किया।

''करेंगे कैसे नहीं! देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज नहीं मिलेगा। समझे।''

यह लीजिए बिलकुल शाही फरमान जारी हो रहे हैं।

''हम काम करने को तैयार हैं। काम बताए जाए!,'' हमने दुहाई दी।

''बहुत–से काम हैं जो तुम कर सकते हो। मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई मुफत तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।''

अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया, माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डालें, तो...

'ऐ हे! खुदा के लिए नहीं। घर में बाढ़ आ जाएगी।' अम्मा ने याचना की। फिर भी तनख्वाह के सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गए।

एक दिन फर्शी दरी पर बहुत–से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू किया। दो–चार ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधार पिटाई शुरू कर दी।

सारा घर धूल से अट गया। खाँसते–खाँसते सब बेदम हो गए। सारी धूल जो दरी पर थी, जो फर्श पर थी, सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। हम लोगों को तुरंत आँगन में निकाला गया। वहाँ हम लोगों ने फौरन झाड़ू देने का फैसला किया।

झाड़ू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेनेवाले उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण–भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींके जिसके हाथ पड़ीं, वह उनसे ही उलटे–सीधे हाथ मारने लगा। अम्मा ने सिर पीट लिया। भई, ये बुजुर्ग काम करने दें तो इंसान काम करे। जब ज़रा–ज़रा सी बात पर टोकने लगे तो बस, हो चुका काम!

असल में झाड़ू देने से पहले ज़रा–सा पानी छिड़क लेना चाहिए। बस, यह खयाल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। एक तो वैसे ही धूल से अटी हुई थी। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गई।

अब सब आँगन से भी निकाले गए। तय हुआ कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बालटियाँ, लोटे, तसले, भगोने, पतीलियाँ लूट ली गई। जिन्हें ये चीजें भी न मिलीं, वे डोंगे–कटोरे और गिलास ही ले भागे। अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मची कि क्या मजाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बर्तन में आ सके। ठूसम–ठास! किसी बालटी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगोने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कहानियाँ और उसके बाद बरतन। फौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की वुफमक भेजी गई, फौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गई।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ हो गए जिन्हें नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफी नहीं थी। पास के बंगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से नहलवाए गए।

हम लोग कायल हो गए कि सचमुच यह सफाई का काम अपने बस की बात नहीं और न पेड़ों की देखभाल हमसे हो सकती है। कम–से–कम मुर्गियाँ ही बंद कर दें।

बस, शाम ही से जो बाँस, छड़ी हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियाँ हाँकने लगे। 'चल दड़बे, दड़बे।'

पर साहब, मुर्गियों को भी किसी ने हमारे विरुद भड़का रखा था। उट–पटाँग ईधर–उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियाँ खीर के प्यालों से जिन पर आया चाँदी के वर्क लगा रही थी, दौड़ती–फड़फड़ाती हुई निकल गई ।

तूफ़ान गुजरने के बाद पता चला कि प्याले खाली हैं और सारी खीर दीदी के कामदानी के दुपट्टे और ताजे धुले सिर पर लगी हुई है। एक बड़ा–सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में कूद पड़ा और कत्थे–चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफेद दूमा जैसी चादर पर छापे मारता हुआ निकल गया।

एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाक मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेज़ी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ी जो बैठी हुई हाथ–मुँह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियाँ बेनवेफल का उँफट बनी चारों तरफ दौड़ रही थीं।

एक भी दड़बे में जाने को राजी न थी।

इधर, किसी को सूझी कि जो भेड़ें आई हुई हैं, लगे हाथों उन्हें भी दाना खिला दिया जाए।

दिन–भर की भूखी भेड़ें दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपटीं तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम–पश्टम तख्तों पर चढ़ गई। पर भेड़–चाल मशहूर है। उनकी नज़र तो बस दाने के सूप पर जमी हुई थी। पलंगों को फलाँगती, बरतन लुढ़काती साथ–साथ चढ़ गई।

तख्त पर बनी दीदी का दुपट्टा फैला हुआ था जिस पर गोखरी, चंपा और सलमा–सितारे रखकर बड़ी दीदी मुगलानी बुआ को कुछ बता रही थीं। भेड़ें बहुत निःसंकोच सबको रौंदती, मेंगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गई ।

जब तूफ़ान गुजर चुका तो ऐसा लगा जैसे जर्मनी की सेना टैंकों और बमबारों सहित उमार से छापा मारकर गुजर गई हो। जहाँ–जहाँ से सूप गुजरा, भेड़ें शिकारी वुफनों की तरह गंमा सूँघती हुई हमला करती गई ।

हज्जन माँ एक पलंग पर दुपटे से मुँह ढाँक सो रही थीं। उन पर से जो भेड़ें दौड़ीं तो न जाने वह सपने में किन महलों की सैर कर रही थीं, दुपटे में उलझी हुई 'मारो–मारो' चीखने लगीं।

इतने में भेड़ें सूप को भूलकर तरकारीवाली की टोकरी पर टूट पड़ीं। वह दालान में बैठी मटर की फलियाँ तोल–तोल कर रसोइए को दे रही थी। वह अपनी तरकारी का बचाव करने के लिए सीना तान कर उठ गई। आपने कभी भेड़ों को मारा होगा, तो अच्छी तरह देखा होगा कि बस, ऐसा लगता है जैसे रुई के तकिए को कूट रहे हों। भेड़ को चोट ही नहीं लगती। बिलकुल यह समझकर कि आप उससे मज़ाक कर रहे हैं। वह आप ही पर चढ़ बैठेगी। ज़रा–सी देर में भेड़ों ने तरकारी छिलकों समेत अपने पेट की कड़ाही में झौंक दी।

इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फौज थी–जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी। वे चार भैंसों का दूध दुहने पर जुट गए। धुली–बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। भैंस एकदम जैसे चारों पैर जोड़कर उठी और बालटी को लात मारकर दूर जा खड़ी हुई।

तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी–पिछाड़ी बाँध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूमा दुह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बाँध दिए गए। पिछल दो पैर

दो पैर चाचा जी की चारपाई के पायों से बाँधा, अगले दो पैरों को बाँधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी को गई। छूटकर जो भागी तो पहले चाचा जी समझे कि शायद कोई सपना देख रहे हैं। फिर जब चारपाई पानी के ड्रम से टकराई आरै पानी छलककर गिरा तो समझे कि अभी–तूफ़ान में फँसे हैं। साथ में भूचाल भी आया हुआ है। फिर जल्दी ही उन्हें असली बात का पता चल गया और वह पलंग की दोनों पटियाँ पकड़े, बच्चों को छोड़ देनेवालों को बुरा–भला सुनाने लगे।

यहाँ बड़ा मज़ा आ रहा था। भैंस भागी जा रही थी और पीछे–पीछे चारपाई और उस पर बैठे हुए थे चाचा जी।

ओहो! एक भूल ही हो गई यानी बछड़ा तो खोला ही नहीं, इसलिए तत्काल बछड़ा भी खोल दिया गया।

तीर निशाने पर बैठा और बछड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए। बछड़ा तत्काल जुट गया। दुहने वाले गिलास–कटोरे लेकर लपके क्योंकि बालटी तो छपाक से गोबर में जा गिरी थी। बछड़ा फिर बागी हो गया।

कुछ दूध जमीन पर और कपड़ों पर गिरा। दो–चार धारें गिलास–कटोरों पर भी पड़ गई । बाकी बछड़ा पी गया। यह सब कुछ, कुछ मिनट के तीन–चौथाई में हो गया।

घर में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था जैसे सारे घर में मुर्गियाँ, भेडें, टूटे हुए तसले, बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे थे। बच्चे बाहर किए गए। मुर्गियाँ बाग में हँकाई गई । मातम–सा मनाती तरकारी वाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं।

''या तो बच्चा–राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके,'' अम्मा ने चुनौती दे दी।

टौर अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया। ''अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज़ को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा।''

ये लीजिए! इन्हें किसी करवट शांति नहीं। हम लोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

– इस्मत चुगताई

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. कहानी में 'मोटे–मोटे किस काम के हैं?' किन के बारे में और क्यों कहा गया?
2. बच्चों के उधम मचाने के कारण घर की क्या दुर्दशा हुई?
3. या तो बच्चाराज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। अम्मा ने कब कहा?और इसका परिणाम क्या हुआ?
4. 'कामचोर' कहानी क्या संदेश देती है?
5. क्या बच्चों ने उचित निर्णय लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पिएँगे।

कहानी से आगे

1. घर के सामान्य काम हों या अपना निजी काम, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुरूप उन्हें करना आवश्यक क्यों है?
2. भरा–पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद?कामचोर कहानी के आधर पर निर्णय कीजिए।
3. बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता–पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार?कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
4. 'कामचोर' कहानी एकल परिवार की कहानी है या संयुक्त परिवार की? इन दोनों तरह के परिवारों में क्या–क्या अंतर होते हैं?

अनुमान और कल्पना

1. घरेलू नौकरों को हटाने की बात किन–किन परिस्थितियों में उठ सकती है? विचार कीजिए।

2. कहानी में एक समृद्ध परिवार के उधमी बच्चों का चित्रण है। आपके अनुमान से उनकी आदत क्यों बिगड़ी होगी?उन्हें ठीक ढंग से रहने के लिए आप क्या–क्या सुझाव देना चाहेंगे?

3. किसी सफल व्यक्ति की जीवनी से उसके विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या के बारे में पढ़ें और सुव्यवस्थित कार्यशैली पर एक लेख लिखें।

भाषा की बात

धुली–बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। धुली शब्द से पहले 'बे' लगाकर बेधुली बना है। जिसका अर्थ है 'बिना धुली' 'बे' एक उपसर्ग है। 'बे' उपसर्ग से बननेवाले कुछ और शब्द हैं बेतुका, बेईमान, बेघर, बेचैन, बेहोश आदि। आप भी नीचे लिखे उपसगो से बनने वाले शब्द खोजिए।

1. प्र .....
2. आ .....
3. भर .....
4. बद .....

KGLFFF

शब्दार्थ

छबैल – दब्बू

घमासान – घोर, भयानक

फरमान – राजाज्ञा

तनख्वाह – वेतन, पगार

फर्शी – फर्श पर बिछी हुई

हवाला – उल्लेख करना, उण्रण

धुंआधार – ताबड़तोड़

वुफमक – फौजी टुकड़ी

धंगा–मुश्ती – धक्का–मुक्की, लड़ना–भिड़ना, शरारत

लथपथ – सना हुआ, तर

दड़बा – मुर्गियों के रहने की जगह

मोरी – नाली, गंदे पानी की नाली

बेनकेल – बिना नकेल; पशुओं की नाक में पहनाई जाने वाली, रस्सी के बिना

दालान – बरामदा

तरकारी – सब्जी

मातम – शोक मनाना

बटालियन – पलटन

कोर्ट मार्शल – फौजी अदालत में सजा सुनाने की तरह

10

जीवन नहीं मरा करता है

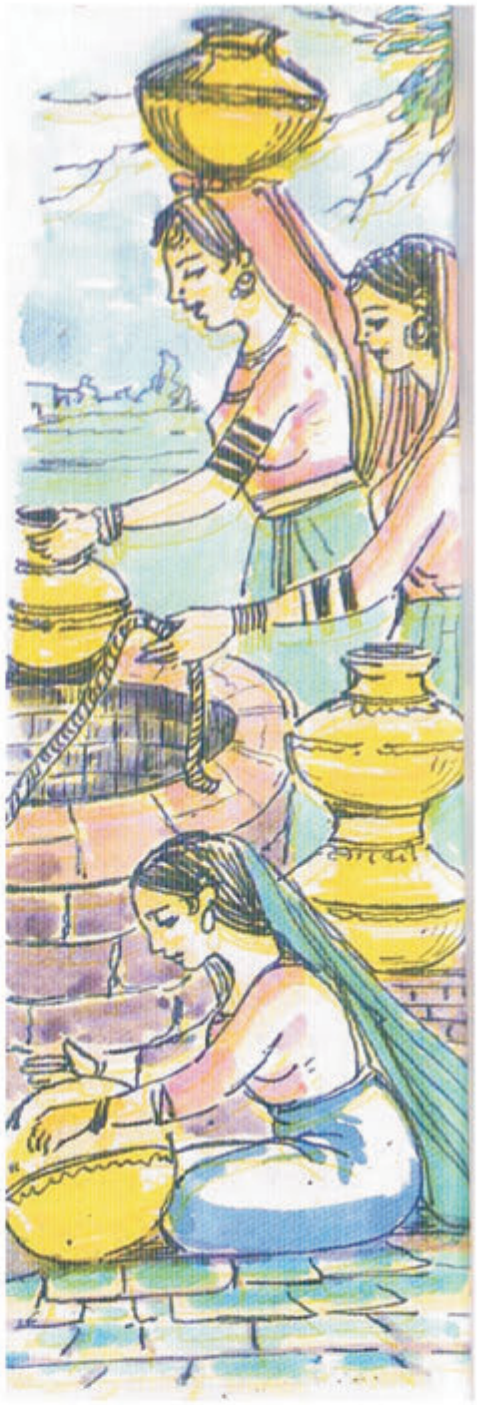

छिप–छिप अश्रु बहाने वालो!
मोती व्यर्थ लुटाने वालो!
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है?नयन–सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी।

गीली उमर बनाने वालो!
डूबे बिना नहाने वालो!
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।

माला बिखर गई तो क्या है?
खुद ही हल हो गई समस्या।
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई समस्या।

रूठे दिवस मनाने वालो!
फटी कमीज़ सिलाने वालो!
कुछ दीयों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।

खाता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी,
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती।

वस्त्र बदलकर आने वालो!
चाल बदलकर जाने वालो।
चंद खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

कितनी बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर।
कितनी बार किश्तियाँ डूबीं
चहल–पहल वैसी है तट पर।

तम की उमर बढ़ाने वालो!
लौ की आयु घटाने वालो!
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुट न लेकिन गंध फूल की।
तूफ़ानों तक ने छेड़ा
पर खिड़की बंद न हुई धूल की।

नफ़ गले लगाने वालो!
सब पर धूल उड़ाने वालो!
कुछ मुखड़ों की नाराज़ी से दर्पण नहीं मरा करता है।

–गोपाल दास 'नीरज'

प्रश्न-अभ्यास

बोध और सराहना

1. इस कविता के माध्यम से कवि ने क्या कहना चाहा है?
2. कवि ने कैसे लोगों को ललकारा है?

नीचे हम एक के बारे में बता रहे हैं। शेष के बारे में आप बताएँ:–

क. .....
ख. .....
ग. .....
घ. .....
ङ. .....

3. कवि ने क्या–क्या उदाहरण देकर हमारा हौंसला बढ़ाया है?
4. कविता के आधार पर सपने को परिभाषित करें।
5. किन स्थितियों में समस्या के समाधान मिल जाने की बात कही गई है?आप उससे कहाँ तक सहमत हैं?
6. 'गीता' के निम्नांकित श्लोक का भाव इस कविता की किन पंक्तियों से मिलता है?
   वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो पराणि।
   तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। (2–22)
7. पनघट पर घड़े फूटने से और जलधारा में नावों के डूबने पर भी तट पर चहल–पहल क्यों बनी रहती है?कवि ने इन उदाहरणों के आधार पर क्या बताना चाहा है?
8. फूल की गंध की विशेषता क्या है?
9. निम्नांकित पदबंधों का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट करें:–

क.	आँसू नीलाम होना	घ.	तम की उम्र बढ़ाना
ख.	गीली उमर	ङ.	लौ की आयु घटाना
ग.	रूठा दिवस		

योग्यता–विसतार

1. हाव–भाव के साथ इस कविता का वाचन करें।
2. इस कविता के भाव से मिलते–जुलते भाव की कविताएँ कई कवियों ने रची है। उनका संकलन करें।
3. ''हमें दु:ख या विपत्ति से नहीं घबराना चाहिए'' विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

KSQSUC

11

जब सिनेमा ने बोलना सीखा

'वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत–प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहतर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।' देश की पहली सवाव् ;बोलती फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। 'पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई, उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

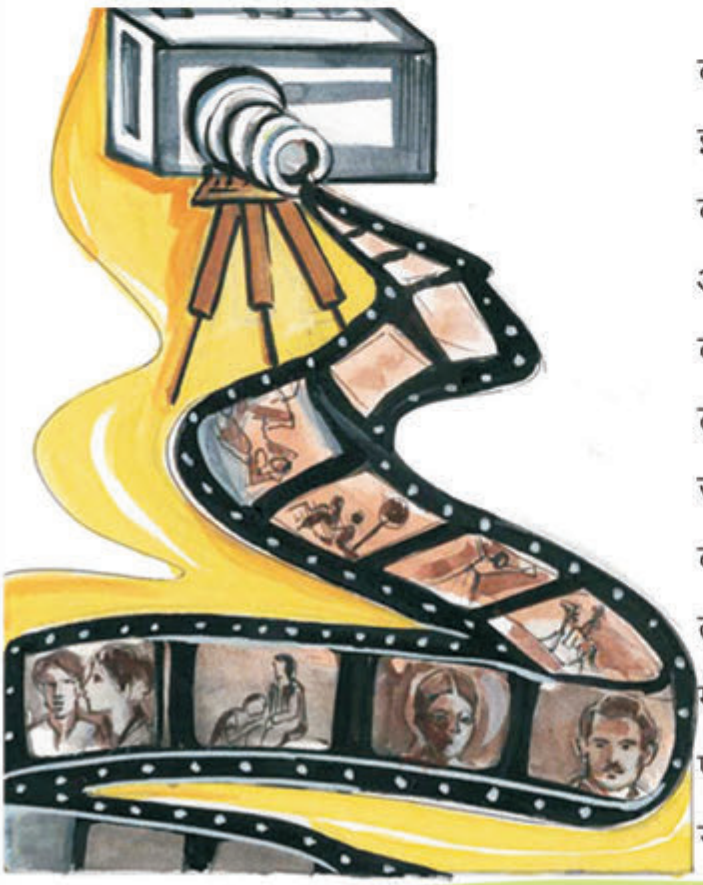

पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनानेवाले फिल्मकार थे अर्देशिर एम. ईरानी। अर्देशिर ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर उन्होंने अपनी फिल्म की पटकथा बनाई। इस नाटक के कई गाने ज्यों के त्यों फिल्म में ले लिए गए। एक इंटरव्यू में अर्देशिर ने उस वक्त कहा था–'हमारे पास कोई संवाद लेखक नहीं था, गीतकार नहीं था,

संगीतकार नहीं था।' इन सबकी शुरुआत होनी थी। अर्देशिर ने फिल्म के गानों के लिए स्वयं की धुनें चुनीं। फिल्म के संगीत में महज तीन वाद्य–तबला, हारमोनियम और वायलिन का इस्तेमाल किया गया। आलम आरा में संगीतकार या गीतकार में स्वतंत्र रूप से किसी का नाम नहीं डाला गया। इस फिल्म में पहले पार्श्वगायक बने डब्लू. एम. खान। पहला गाना था –'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे, अगर देने की ताकत है।'

आलम आरा का संगीत उस समय डिस्क फॉर्म में रिकार्ड नहीं किया जा सका, फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो साउंड के कारण ही इसकी शूटिंग रात में करनी पड़ती थी। मूक युग की अधिकतर फिल्मों को दिन के प्रकाश में शूट कर लिया जाता था, मगर आलम आरा की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें छत्रिम प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ी। यहीं से प्रकाश प्रणाली बनी जो आगे पिफल्म निर्माण का जरूरी हिस्सा बनी। 'आलम आरा' ने भविष्य के कई स्टार और तकनीशियन तो दिए ही, अर्देशिर की कंपनी तक ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अमिाक मूक और लगभग सौ सवाव्फ फिल्में बनाई। आलम आरा फिल्म 'अरेबियन नाइट्स' जैसी फैंटेसी थी। फिल्म ने हिंदी–उर्दू के मेलवाली 'हिंदुस्तानी' भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसमें गीत, संगीत तथा नृत्य के अनोखे संयोजन थे। फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे विठ्ठल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पानेवाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विठ्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर

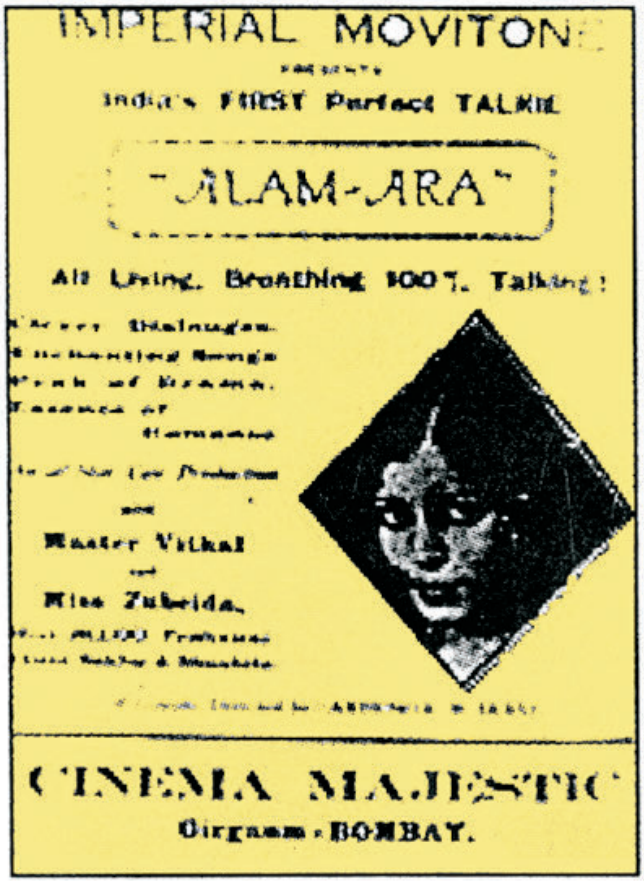

नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह मेहबूब को नायक बना दिया गया। विठठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया।

उस दौर में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा जो तब के मशहूर वकील हुआ करते थे। विठठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बने। उनकी कामयाबी आगे भी जारी रही। मराठी और हिंदी फिल्मों में वे लंबे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे। इसके अलावा 'आलम आरा' में सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे अभिनेता भी मौजूद रहे आगे चलकर जो फिल्मोद्योग के प्रमुख स्तंभ बने।

यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के 'मैजेस्टिक' सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म 8 सप्ताह तक 'हाउसफुल' चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए नियंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। समीक्षकों ने इसे 'भड़कीली फैंटेसी' फिल्म करार दिया था मगर दर्शकों के लिए यह पिफल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म 10 हशार फुट लंबी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था।

सवाक फिल्मों लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम–कथाओं को विषय के रूप में चुना गया। इनके अलावा कई सामाजिक विषयों वाली फिल्में भी बनीं। ऐसी ही एक फिल्म थी –'खुदा की शान।' इसमें एक किरदार महात्मा गांधी जैसा था। इसके कारण सवाव्फ सिनेमा को ब्रिटिश प्रशासकों की तीखी नशर का सामना करना पड़ा।

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत करानेवाले निर्माता–निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।

जब पहली बार सिनेमा ने बोलना सीख लिया, सिनेमा में काम करने के लिए पढ़े–लिखे अभिनेता–अभिनेत्रियों की जरूरत भी शुरू हुई क्योंकि अब संवाद भी बोलने थे, सिर्फ अभिनय से काम नहीं चलनेवाला था। मूक फिल्मों के दौर में तो पहलवान जैसे शरीरवाले, स्टंट करनेवाले और उछल–कूद करनेवाले अभिनेताओं से काम चल जाया करता था। अब उन्हें संवाद बोलना था और गायन की प्रतिभा की कद्र भी होने लगी थी। इसलिए 'आलम आरा' के बाद आरंभिक 'सवाक्फ' दौर की फिल्मों में कई 'गायक–अभिनेता' बड़े पर्दे पर नशर आने लगे। हिंदी–उर्दू भाषाओं का महत्व बढ़ा। सिनेमा में देह और तकनीक की भाषा की जगह जन प्रचलित बोलचाल की भाषाओं का दाखिला हुआ। सिनेमा ज्यादा देसी हुआ। एक तरह की नयी आज़ादी थी जिससे आगे चलकर हमारे दैनिक और सार्वजनिक जीवन का प्रतिबिंब फिल्मों में बेहतर होकर उभरने लगा।

अभिनेताओं–अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर भी खूब पड़ रहा था। 'धधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपनी केशसज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई।

भारतीय सिनेमा के जनक पफाल्वेफ को 'सवाक्' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

–प्रदीप तिवारी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन–से वाक्य छापे गए?उस फिल्म में कितने चेहरे थे?स्पष्ट कीजिए।
2. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली?उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधर कहाँ से लिया?विचार व्यक्त कीजिए।
3. विठठल का चयन आलम आरा फिल्म के नायक वेफ रूप हुआ लेकिन उन्हें हटाया क्यों गया?विठठल ने पुनः नायक होने के लिए क्या किया?विचार प्रकट कीजिए।
4. पहली सवाक् फिल्म के निर्माता–निदेशक अर्देशिर को जब सम्मानित किया गया तब सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था?अर्देशिर ने क्या कहा? और इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की है? लिखिए।

पाठ से आगे

1. मूक सिनेमा में संवाद नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर, जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें अनेक परिवर्तन हुए। उन परिवर्तनों को अभिनेता, दर्शक और कुछ तकनीकी दृष्टि से पाठ का आधार लेकर खोजें, साथ ही अपनी कल्पना का भी सहयोग लें।
2. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी–कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है ?

अनुमान और कल्पना

1. किसी मूक सिनेमा में बिना आवाज़ के ठहाकेदार हँसी कैसी दिखेगी?अभिनय करके अनुभव कीजिए।
2. मूक फिल्म देखने का एक उपाय यह है कि आप टेलीविजन की आवाज़ बंद करके फिल्म देखें। उसकी कहानी को समझने का प्रयास करें और अनुमान लगाएँ कि फिल्म में संवाद और दृश्य की हिस्सेदारी कितनी है?

भाषा की बात

1. सवाक् शब्द वाक् के पहले 'स' लगाने से बना है। स उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग की भाँति प्रयोग करके शब्द बनाए! और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताए!। हित, परिवार, विनय, चित्रा, बल, सम्मान।
2. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में। हिदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार है –अ/अन, नि, दु, क/वुफ, स/सु, अध्, बिन, औ आदि। पाठ में आए उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	शब्द
वाक	स	–	सवाक्
लोचन	सु	आ	सुलोचना
फिल्म	–	कार	फिल्मकार
कामयाब	–	ई	कामयाबी

KSZNVZ

इस प्रकार के 15–15 उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

वेफवल पढ़ने वेफ लिए

शब्दार्थ

सवाक् फिल्म – मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म

पटकथा – फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी

संवाद – फिल्म में की जाने वाली बातचीत

पर्श्वगायक – पर्दे के पीछे से गाने वाला

डिस्क पफॉर्म – रिकॉडिंग का एक रूप

किरदार – अभिनेता की भूमिका, चरित्र

खिताब – उपाधि, सम्मान

12

जहाँ पहिया है

पुडुकोई ; तमिलनाडु मेः साइकिल चलाना एक सामाजिक आंदोलन है? कुछ अजीब–सी बात है, है न! लेकिन चौंकने की बात नहीं है। पुडुकोई ज़िले की हज़ारों नवसाक्षर ग्रामीण महिलाओं के लिए यह अब आम बात है। अपने पिछड़ेपन पर लात मारने, अपना विरोध व्यक्त करने और उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई–न–कोई तरीका लोग निकाल ही लेते हैं। कभी–कभी ये तरीके अजीबो–गरीब होते हैं।

भारत के सर्वाधिक गरीब जिलों में से एक है पुडुको'ई। पिछले दिनों यहाँ की ग्रामीण महिलाओं ने अपनी स्वाधीनता, आज़ादी और गतिशीलता को अभिव्यक्त करने के लिए प्रतीक के रूप में साइकिल को चुना है। उनमें से अधिकांश नवसाक्षर थीं। अगर हम दस वर्ष से कम उम्र की लड़कियों को अलग कर दें तो इसका अर्थ यह होगा कि यहाँ ग्रामीण महिलाओं के एक–चौथाई हिस्से ने साइकिल चलाना सीख

लिया है और इन महिलाओं में से सत्तर हज़ार से भी अधिक महिलाओं ने 'प्रदर्शन एवं प्रतियोगिता' जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में बड़े गर्व के साथ अपने नए कौशल का प्रदर्शन किया और अभी भी उनमें साइकिल चलाने की इच्छा जारी है। वहाँ इसके लिए कई 'प्रशिक्षण शिविर' चल रहे हैं।

ग्रामीण पुडुको'ई के मुख्य इलाकों में अत्यंत रूढ़िवादी पृष्ठभूमि से आई युवा मुस्लिम लड़कियाँ सड़कों से अपनी साइकिलों पर जाती हुई दिखाई देती हैं। जमीला बीवी नामक एक युवती ने जिसने साइकिल चलाना शुरू किया है, मुझसे कहा –यह मेरा अधिकार है, अब हम कहीं भी जा सकते हैं। अब हमें बस का इंतज़ार नहीं करना पड़ता। मुझे पता है कि जब मैंने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग .ाफब्तियाँ कसते थे। लेकिन मैंने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

फातिमा एक माध्यमिक स्कूल में पढ़ाती हैं और उन्हें साइकिल चलाने का ऐसा चाव लगा है कि हर शाम आधा घंटे के लिए किराए पर साइकिल लेती हैं। एक नयी साइकिल खरीदने की उनकी हैसियत नहीं है। फातिमा ने बताया कि साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। मैं कभी इसे नहीं छोड़ूँगी। जमीला, फातिमा और उनकी मित्र अवकन्नी इन सबकी उम्र 20 वर्ष के आसपास है और इन्होंने अपने समुदाय की अनेक युवतियों को साइकिल चलाना सिखाया है।

इस जिले में साइकिल की धूम मची हुई है। इसकी प्रशंसकों में हैं महिला खेतिहर मज़दूर, पत्थर खदानों में मज़दूरी करने वाली औरतें और गाँवों में काम करने वाली नर्सें। बालवाड़ी और आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, बेशकीमती पत्थरों को तराशने में लगी औरतें और स्कूल की अध्यापिकाएँ भी साइकिल का जमकर इस्तेमाल कर रही हैं। ग्राम सेविकाएँ

और दोपहर का भोजन पहुँचाने वाली औरतें भी पीछे नहीं हैं। सबसे बड़ी संख्या उन लोगों की है जो अभी नवसाक्षर हुई हैं। जिस किसी नवसाक्षर अथवा नयी–नयी साइकिल चलानेवाली महिला से मैंने बातचीत की, उसने साइकिल चलाने और अपनी व्यक्तिगत आज़ादी के बीच एक सीमा संबंध बताया।

साइकिल आंदोलन की एक अगुआ का कहना है, मुख्य बात यह है कि इस आंदोलन ने महिलाओं को बहुत आत्मविश्वास प्रदान किया। महत्वपूर्ण यह है कि इसने पुरुषों पर उनकी निर्भरता कम कर दी है। अब हम प्रायः देखते हैं कि कोई औरत अपनी साइकिल पर चार किलोमीटर तक की दूरी आसानी से तय कर पानी लाने जाती है। कभी–कभी साथ में उसके बच्चे भी होते हैं। यहाँ तक कि साइकिल से दूसरे स्थानों से सामान ढोने की व्यवस्था भी खुद ही की जा सकती है। लेकिन यकीन मानिए, जब इन्होंने साइकिल चलाना शुरू किया तो इन पर लोगों ने जमकर प्रहार किया जिसे इन्हें झेलना पड़ा। गंदी–गंदी टिप्पणियाँ की गई लेकिन धीरे–धीरे साईकिल चलाने को सामाजिक स्वीकृति मिली। इसलिए महिलाओं ने इसे अपना लिया। साइकिल प्रशिक्षण शिविर देखना एक असाधारण अनुभव है। किलाकुरुचि गाँव में सभी साइकिल सीखनेवाली महिलाएँ

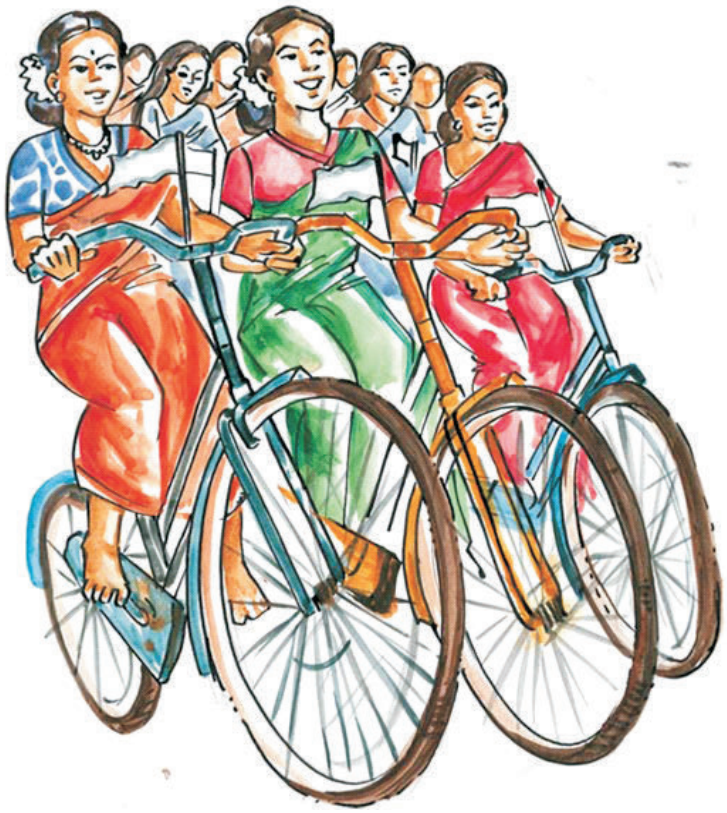

रविवार को इकट्ठी हुई थीं। साइकिल चलाने के आंदोलन के समर्थन में ऐसे आवेग देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता। उन्हें इसे सीखना ही है। साइकिल ने उन्हें पुरुषों द्वारा थोपे गए दायरे के अंदर रोजमर्रा की घिसी–पिटी चर्चा से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। ये नव–साइकिल चालक गाने भी गाती हैं। उन गानों में साइकिल चलाने को प्रोत्साहन दिया गया है। इनमें से एक गाने की पंक्ति का भाव है –'ओ बहिना, आ सीखें साइकिल, घूमें समय के पहिए संग...' जिन्हें साइकिल चलाने का प्रशिक्षण मिल चुका है उनमें से बहुत बड़ी संख्या में साइकिल सीख चुकी महिलाएँ अभी नयी–नयी साइकिल सीखनेवाली महिलाओं को भरपूर सहयोग देती हैं। उनमें यहाँ न केवल सीखने–सिखाने की इच्छा दिखाई देती है बल्कि उनके बीच यह उत्साह भी दिखाई देता है कि सभी महिलाओं को साइकिल चलाना सीखना चाहिए।

1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह जिला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता। हैंडल पर झंडियाँ लगाए, घंटियाँ बजाते हुए साइकिल पर सवार 1500 महिलाओ ने पडुकोई में तूफान ला दिया। महिलाओं की साइकिल चलाने की इस तैयारी ने यहाँ रहनेवालों को हक्का–बक्का कर दिया।

इस सारे मामले पर पुरुषों की क्या राय थी?इसके पक्ष में 'आर. साइकिल्स' के मालिक को तो रहना ही था। इस अकेले डीलर के यहाँ लेडीज़ साइकिल की बिक्री में साल भर के अंदर काफी वृद्धि हुई। माना जा सकता है कि इस आँकड़े को दो कारणों से कम करके आँका गया। पहली बात तो यह है कि ढेर सारी महिलाओं ने जो लेडीज़ साईकिल का इंतज़ार नहीं कर सकती थीं, जेंट्स साइकिलें खरीदने लगीं। दूसरे, उस डीलर ने बड़ी सतर्कता के साथ यह जानकारी मुझे दी थी –उसे लगा कि मैं बिक्री कर विभाग का कोई आदमी हूँ।

कुदिमि अन्नामलाई की चिलचिलाती धूप में एक अद्भुत दृश्य की तरह पत्थर के खदानों में दौड़ती–भागती बाईस वर्षीय मनोरमनी को लोगों ने साइकिल सिखलाते देखा। उसने मुझे बताया –हमारा इलाका मुख्य शहर से कटा हुआ है। यहाँ जो

साइकिल चलाना जानते हैं उनकी गतिशीलता बढ़ जाती है।

साइकिल चलाने के बहुत निश्चित आर्थिक निहितार्थ थे। इससे आयु में वृदि हुई है। यहाँ की कुछ महिलाएँ अगल–बगल के गाँवों में कृषि संबंधी अथवा अन्य उत्पाद बेच आती हैं। साईकिल की वजह से बसों के इंतज़ार में व्यय होने वाला उनका समय बच जाता है। खराब परिवहन व्यवस्था वाले स्थानों के लिए तो यह बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे, इससे इन्हें इतना समय मिल जाता है कि ये अपने सामान बेचने पर ज्यादा ध्यान केंद्रित कर पाती हैं। तीसरे, इससे ये और अधिक इलाकों में जा पाती हैं। अंतिम बात यह है किअगर आप चाहें तो इससे आराम करने का काफी समय मिल सकता है।

जिन छोटे उत्पादकों को बसों का इंतज़ार करना पड़ता था, बस स्टॉप तक पहुँचने के लिए भी पिता, भाई, पति या बेटों पर निर्भर रहना पड़ता था। वे अपना सामान बेचने के लिए कुछ गिने–चुने गाँवों तक ही जा पाती थीं। कुछ को पैदल ही चलना पड़ता था। जिनके पास साईकिल नहीं है वे अब भी पैदल ही जाती हैं। फिर उन्हें बच्चों की देखभाल के लिए या पीने का पानी लाने जैसे घरेलू कामों केलिए भी जल्दी ही भागकर घर पहुँचना पड़ता था। अब जिनके पास साइकिलें हैं वे सारा काम बिना किसी दिक्कत के कर लेती

हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अब आप किसी सुनसान रास्ते पर भी देख सकते हैं कि कोई युवा – माँ साइकिल पर आगे अपने बच्चे को बैठाए, पीछे कैरियर पर सामान लादे चली जा रही है। वह अपने साथ पानी से भरे दो या तीन बर्तन लिए अपने घर या काम पर जाती देखी जा सकती है।

अन्य पहलुओं से ज़्यादा आर्थिक पहलू पर ही बल देना गलत होगा। साइकिल प्रशिक्षण से महिलाओं के अंदर आत्मसम्मान की भावना पैदा हुई है यह बहुत महत्वपूर्ण है। फातिमा का कहना है – बेशक, यह मामला केवल आर्थिक नहीं है। फातिमा ने यह बात इस तरह कही जिससे मुझे लगा कि मैं कितनी मूर्खतापूर्ण ढंग से सोच रहा था। उसने आगे कहा –साइकिल चलाने से मेरी कौन सी कमाई होती है। मैं तो पैसे ही गँवाती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं साइकिल खरीद सकूँ। लेकिन हर शाम मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और खुशहाली का अनुभव कर सकूँ। पुडुकोई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी के बारे में कभी इस तरह सोचा ही नहीं था। मैंने कभी साइकिल को आज़ादी का प्रतीक नहीं समझता था।

एक महिला ने बताया –लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धि है। लोग इस पर हँस सकते हैं लेकिन केवल यहाँ की औरतें ही समझ सकती हैं कि उनके लिए यह कितना महत्वपूर्ण है। जो पुरुष इसका विरोध करते हैं, वे जाएँ और टहलें क्योंकि जब साइकिल चलाने की बात आती है, वे महिलाओं की बराबरी कर ही नहीं सकते।

–पी. साईनाथ

प्रश्न-अभ्यास

जंजीरें

1. "..उन जंजीरों को तोड़ने का जिनमें वे जकड़े हुए हैं, कोई–न–कोई तरीका

आपके विचार से लेखक 'जंजीरों' द्वारा किन समस्याओं की ओर इशारा कर रहा है?

2. क्या आप लेखक की इस बात से सहमत हैं? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

पहिया

1. 'साइकिल आंदोलन' से पुडुकोई की महिलाओं के जीवन में कौन–कौन से बदलाव आए हैं?
2. शुरूआत में पुरुषों ने इस आंदोलन का विरोध किया परंतु आर. साइकिल्स के मालिक ने इसका समर्थन किया, क्यों?
3. प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन–कौन सी बाधा आई?

शीर्षक की बात

1. आपके विचार से लेखक ने इस पाठ का नाम 'जहाँ पहिया है' क्यों रखा होगा?
2. अपने मन से इस पाठ का कोई दूसरा शीर्षक सुझाइए। अपने दिए हुए शीर्षक के पक्ष में तर्क दीजिए।

समझने की बात

1. लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण औरतों के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई ज़हाज उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धियाँ हैं।
   साइकिल चलाना ग्रामीण महिलाओं के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? समूह बनाकर चर्चा कीजिए।
2. पुडुकोई पहुँचने से पहले मैंने इस विनम्र सवारी केबारे में इस तरह सोचा ही नहीं था।
   साइकिल को विनम्र सवारी क्यों कहा गया है?

साइकिल

1. फातिमा ने कहा, "...मैं किराए पर साइकिल लेती हूँ ताकि मैं आज़ादी और

साइकिल चलाने से फातिमा और पुडुकोई की महिलाओं को 'आज़ादी' का अनुभव क्यों होता होगा?

कल्पना से

1. पुडुकोई में कोई महिला अगर चुनाव लड़ती तो अपना पार्टी–चिन्ह क्या बनाती और क्यों?
2. अगर दुनिया के सभी पहिए हड़ताल कर दें तो क्या होगा?
3. 1992 में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के बाद अब यह ज़िला कभी भी पहले जैसा नहीं हो सकता।
   इस कथन का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
4. मान लीजिए आप एक संवाददाता हैं। आपको 8 मार्च 1992 के दिन पुडुकोई में हुई घटना का समाचार तैयार करना है। पाठ में दी गई सूचनाओं और अपनी कल्पना के आधार पर एक समाचार तैयार कीजिए।

भाषा की बात

उपसर्ग और प्रत्ययों के बारे में आप जान चुके हैं। इस पाठ में आए उपसर्गयुक्त शब्दों को छाँटिए। उनके मूल शब्द भी लिखिए। आपकी सहायता के लिए इस पाठ में प्रयुक्त कुछ 'उपसर्ग' और 'प्रत्यय' इस प्रकार हैं –अभि,
प्र, अनु, परि, वि;उपसर्गद्ध, इक, वाला, ता, ना।

KT9JXM

शब्दार्थ

फब्ती	–	चोट करने वाली या चुभती बात
यकीन	–	विश्वास
घिसीपिटी	–	जो बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी

13

अकबरी लोटा

लाला झाऊलाल को खाने–पीने की कमी नहीं थी। काशी के ठठेरी बाज़ार में मकान था। नीचे की दुकानों से एक सौ रुपये मासिक के करीब किराया उतर आता था। अच्छा खाते थे, अच्छा पहनते थे, पर ढाई सौ रुपये तो एक साथ आँख सेंकने के लिए भी न मिलते थे।

इसलिए जब उनकी पत्नी ने एक दिन एकाएक ढाई सौ रुपये की माँग पेश की, तब उनका जी एक बार ज़ोर से सनसनाया और फिर बैठ गया। उनकी यह दशा देखकर पत्नी ने कहा – "डरिए मत, आप देने में असमर्थ हों तो मैं अपने भाई से माँग लूँ ?"